राज्य, वाचाएँ और पुराने नियम का कैनन

अध्याय 3

दिव्य वाचाएँ

Manuscript

thirdmill

Biblical Education. For the World. For Free.

© थर्ड मिलेनियम मिनिस्ट्रीज़ 2021के द्वारा

सर्वाधिकार सुरक्षित। इस प्रकाशन के किसी भी भाग को प्रकाशक, थर्ड मिलेनियम मिनिस्ट्रीज़, इनकोरपोरेशन, 316, लाइव ओक्स बुलेवार्ड, कैसलबरी, फ्लोरिडा 32707 की लिखित अनुमति के बिना समीक्षा, टिप्पणी, या अध्ययन के उद्देश्यों के लिए संक्षिप्त उद्धरणों के अतिरिक्त किसी भी रूप में या किसी भी तरह के लाभ के लिए पुनः प्रकशित नहीं किया जा सकता।

पवित्रशास्त्र के सभी उद्धरण बाइबल सोसाइटी ऑफ़ इंडिया की हिन्दी की पवित्र बाइबल से लिए गए हैं। सर्वाधिकार © The Bible Society of India

थर्ड मिलेनियम के विषय में

1997 में स्थापित, थर्ड मिलेनियम एक लाभनिरपेक्ष सुसमाचारिक मसीही सेवकाई है जो पूरे संसार के लिए मुफ्त में बाइबल आधारित शिक्षा प्रदान करने के लिए प्रतिबद्ध है।

संसार के लिए मुफ़्त में बाइबल आधारित शिक्षा।

हमारा लक्ष्य संसार भर के हज़ारों पासवानों और मसीही अगुवों को मुफ़्त में मसीही शिक्षा प्रदान करना है जिन्हें सेवकाई के लिए पर्याप्त प्रशिक्षण प्राप्त नहीं हुआ है। हम इस लक्ष्य को अंग्रेजी, अरबी, मनडारिन, रूसी, और स्पैनिश भाषाओं में अद्वितीय मल्टीमीडिया सेमिनारी पाठ्यक्रम की रचना करने और उन्हें विश्व भर में वितरित करने के द्वारा पूरा कर रहे हैं। हमारे पाठयक्रम का अनुवाद सहभागी सेवकाइयों के द्वारा दर्जन भर से अधिक अन्य भाषाओं में भी किया जा रहा है। पाठ्यक्रम में ग्राफिक वीडियोस, लिखित निर्देश, और इंटरनेट संसाधन पाए जाते हैं। इसकी रचना ऐसे की गई है कि इसका प्रयोग ऑनलाइन और सामुदायिक अध्ययन दोनों संदर्भों में स्कूलों, समूहों, और व्यक्तिगत रूपों में किया जा सकता है।

वर्षों के प्रयासों से हमने अच्छी विषय-वस्तु और गुणवत्ता से परिपूर्ण पुरस्कार-प्राप्त मल्टीमीडिया अध्ययनों की रचना करने की बहुत ही किफ़ायती विधि को विकसित किया है। हमारे लेखक और संपादक धर्मवैज्ञानिक रूप से प्रशिक्षित शिक्षक हैं, हमारे अनुवादक धर्मवैज्ञानिक रूप से दक्ष हैं और लक्ष्य-भाषाओं के मातृभाषी हैं, और हमारे अध्यायों में संसार भर के सैकड़ों सम्मानित सेमिनारी प्रोफ़ेसरों और पासवानों के गहन विचार शामिल हैं। इसके अतिरिक्त हमारे ग्राफिक डिजाइनर, चित्रकार, और प्रोडयूसर्स अत्याधुनिक उपकरणों और तकनीकों का प्रयोग करने के द्वारा उत्पादन के उच्चतम स्तरों का पालन करते हैं।

अपने वितरण के लक्ष्यों को पूरा करने के लिए थर्ड मिलेनियम ने कलीसियाओं, सेमिनारियों, बाइबल स्कूलों, मिशनरियों, मसीही प्रसारकों, सेटलाइट टेलीविजन प्रदाताओं, और अन्य संगठनों के साथ रणनीतिक सहभागिताएँ स्थापित की हैं। इन संबंधों के फलस्वरूप स्थानीय अगुवों, पासवानों, और सेमिनारी विद्यार्थियों तक अनेक विडियो अध्ययनों को पहुँचाया जा चुका है। हमारी वेबसाइट्स भी वितरण के माध्यम के रूप में कार्य करती हैं और हमारे अध्यायों के लिए अतिरिक्त सामग्रियों को भी प्रदान करती हैं, जिसमें ऐसे निर्देश भी शामिल हैं कि अपने शिक्षण समुदाय को कैसे आरंभ किया जाए।

थर्ड मिलेनियम a 501(c)(3) कारपोरेशन के रूप में IRS के द्वारा मान्यता प्राप्त है। हम आर्थिक रूप से कलीसियाओं, संस्थानों, व्यापारों और लोगों के उदार, टैक्स-डीडक्टीबल योगदानों पर आधारित हैं। हमारी सेवकाई के बारे में अधिक जानकारी के लिए, और यह जानने के लिए कि आप किस प्रकार इसमें सहभागी हो सकते हैं, कृपया हमारी वैबसाइट http://thirdmill.org को देखें।

विषय-वस्तु

परिचय....1

राज्य और वाचाएँ....1

पुरातात्विक खोजें....2

बाइबल-आधारित अन्तर्दृष्टियाँ....3

वाचाओं का इतिहास....5

सार्वभौमिक वाचाएँ....6

आदम....6

नूह....7

राष्ट्रीय वाचाएँ....8

अब्राहम....8

मूसा....9

दाऊद....10

नई वाचा....10

वाचा के पहलू....12

सार्वभौमिक वाचाएँ....13

आदम....13

नूह....13

राष्ट्रीय वाचाएँ....14

अब्राहम....15

मूसा....16

दाऊद....16

नई वाचा....17

वाचाओं के लोग....19

मानवता की श्रेणियाँ....19

वाचाओं के अन्तर्गत....20

शामिल और वंचित....21

पहलुओं का प्रयोग....22

वंचित अविश्वासी....22

शामिल अविश्वासी....23

शामिल विश्वासी....24

उपसंहार....26

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट thirdmill.org पर जाएँ।

राज्य, वाचाएँ और पुराने नियम का कैनन

अध्याय तीन

दिव्य वाचाएँ

परिचय

यदि आप एक राजा होते, स्वतन्त्र नरेश, तो आप अपने राज्य पर किस प्रकार शासन करते? अपने शासन की प्रगति और गतिरोधों का आप किस प्रकार प्रबन्ध करते? आप अपने साम्राज्य के बाहर के मित्रों और शत्रुओं से कैसे निपटते और किस प्रकार आप अपने राज्य के अन्दर के वफादार सेवकों और विश्वासघातियों का सामना करते?

पुराने नियम का अध्ययन करते समय अपने आप से पूछने के लिए ये कुछ अच्छे सवाल हैं। आखिरकार, पुराना नियम परमेश्वर को दिव्य राजा के रूप में प्रस्तुत करता है जो अपने राज्य को बना रहा है और पृथ्वी की छोर तक उसका विस्तार कर रहा है। उसके राज्य में प्रगति और गतिरोधों का एक लम्बा इतिहास है। परमेश्वर के राज्य के बाहर शत्रु और मित्र दोनों रहे हैं, और उसके राज्य में भी विश्वासघाती और वफादार सेवक रहे हैं। अत:, परमेश्वर ने अपने राज्य पर किस प्रकार शासन करने का निर्णय लिया? वह अपने राज्य के अन्दर जीवन को किस प्रकार नियन्त्रित करता है? बाइबल का उत्तर यह है-परमेश्वर ने वाचाओं के द्वारा अपने राज्य का संचालन किया।

यह राज्य, वाचाएँ और पुराने नियम का कैनन की हमारी श्रृंखला का तीसरा अध्याय है। पुराने नियम के इस सर्वेक्षण में हम देखेंगे कि पुराना नियम परमेश्वर के राज्य के बारे में एक पुस्तक है, एक राज्य जिसका परमेश्वर ने वाचाओं के द्वारा संचालन किया, जिनका पुराने नियम की पुस्तकों या "कैनन" में वर्णन किया गया और परमेश्वर के लोगों पर लागू किया गया।

हमने इस अध्याय को "दिव्य वाचाएँ" शीर्षक दिया है क्योंकि हम देखेंगे कि किस प्रकार परमेश्वर ने पुराने नियम के इतिहास में स्थापित वाचाओं की श्रृंखला के द्वारा अपने राज्य का संचालन किया। जब हम इन वाचाओं की रूपरेखाओं को समझते हैं, तो हम और अधिक स्पष्टता से यह देखेंगे कि किस प्रकार दिव्य वाचाओं ने पुराने नियम में परमेश्वर के लोगों के जीवन का मार्गदर्शन किया, और हम इस बात को भी अधिक स्पष्टता से देखेंगे कि वे किस प्रकार आज भी हमारे जीवन का मार्गदर्शन करती हैं।

दिव्य वाचाओं का हमारा अनुसन्धान चार भागों में विभाजित होगा: पहला, हम परमेश्वर के राज्य और उसकी वाचाओं के बीच मूलभूत संबंध की जाँच करेंगे; दूसरा, हम पुराने नियम में वाचाओं के ऐतिहासिक विकास को देखेंगे; तीसरा, हम परमेश्वर के साथ वाचा के जीवन की प्रतिक्रियाओं को जाँचेंगे; और चौथा, हम दिव्य वाचाओं के लोगों का अनुसन्धान करेंगे। आइए पहले हम परमेश्वर के राज्य और उसकी वाचाओं के बीच संबध को देखते हैं।

राज्य और वाचाएँ

पिछले अध्याय में हमने इस तथ्य को छुआ कि सम्पूर्ण पुराना नियम परमेश्वर के राज्य के स्वर्ग के समान पृथ्वी पर आगमन के विषय में एकीकृत है। इस अध्याय में हम देखेंगे कि "वाचा" की विचारधारा पुराने नियम विश्वास के हृदय के भी अत्यधिक निकट है। पुराने नियम में वाचाओं का महत्व कई प्रकार से स्पष्ट है, इस तथ्य सहित कि सामान्यत: अनुवादित शब्द "वाचा," इब्रानी में बेरीत, 287 बार आता है। परमेश्वर के राज्य से संबंधित इस पुस्तक में "वाचा" शब्द की प्रमुखता एक महत्वपूर्ण सवाल को खड़ा

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट thirdmill.org पर जाएँ।

करती है: दिव्य वाचाओं का परमेश्वर के राज्य से कैसा संबंध था? बाइबल की इन दो अत्यधिक केन्द्रिय विचारधाराओं के बीच क्या जुड़ाव है?

इन प्रश्नों का उत्तर देने के लिए हम दो मुद्दों को देखेंगे। पहला, हम कुछ नवीन पुरातात्विक खोजों का परिचय देंगे जो बाइबल की वाचाओं की मूलभूत प्रकृति को समझने के लिए पृष्ठभूमि उपलब्ध कराती हैं। और दूसरा, हम देखेंगे कि ये खोजें किस प्रकार परमेश्वर के राज्य और उसकी वाचाओं के बीच बाइबल-आधारित संबंध के बारे में हमें अन्तर्दृष्टि प्रदान करती हैं। आइए हम कुछ नवीन पुरातात्विक खोजों का वर्णन करते हैं जो बाइबल की वाचाओं के हमारे अध्ययन के लिए प्रासंगिक हैं।

पुरातात्विक खोजें

पुराने नियम के बारे में एक सर्वाधिक विशिष्ट बात है कि यह परी कथा नहीं है। जिन घटनाओं का हम इसमें वर्णन पाते हैं वे वास्तव में मध्य-पूर्व के प्राचीन संसार में, विशिष्ट समय और स्थान में घटीं। हमारे समय में पुराने नियम का अध्ययन करने के बारे में सर्वाधिक उत्तेजक बात यह है कि हमें हाल के पुरातत्व विज्ञान के द्वारा बाइबल के उस प्राचीन संसार के बारे में कहीं अधिक जानकारी होने का सौभाग्य प्राप्त है। हम अतीत के मसीहियों से कहीं अधिक जानते हैं, और परिणामस्वरूप, हम अक्सर पाते हैं कि इस पृष्ठभूमि के ज्ञान के कारण पुराने नियम की हमारी समझ में वृद्धि होती है। जब पुराने नियम की वाचाओं को समझने की बात हो तो यह निश्चित रूप से सत्य है। पिछली सदी में, प्राचीन इस्राएल के आस-पास की संस्कृतियों के बारे में बहुत सी खोजें की गईं जिन्होंने बाइबल-आधारित वाचाओं के स्वभाव के बारे में हमें कई अन्तदृष्टियाँ प्रदान की हैं।

बहुत से प्राचीन लेख वाचाओं को पूरी तरह समझने में हमारी सहायता करते हैं, परन्तु हमारे उद्देश्यों के लिए, सर्वाधिक महत्वपूर्ण खोज लेखों का एक समूह है जिन्हें सुजरेन-वासल सन्धियों के नाम से जाना जाता है। अब, इस शब्द से परेशान न हो जाएँ। “सुजरेन” शब्द उसी मूल शब्द से आता है जिस से लैटिन शब्द सीजर, रूसी भाषा में जार, या जर्मन भाषा में कैसर शब्द आते हैं। इसका सीधा सा अर्थ है “सम्राट।” और नि:सन्देह, “वासल” शब्द का अर्थ है “सेवक,” या इस मामले में, “सम्राट का सेवक।” सुजरेन-वासल सन्धि एक महान सम्राट (या सुजरेन) तथा एक छोटे राजा या देश के बीच का अन्तर्राष्ट्रीय अनुबन्ध थी। इन सन्धियों के अन्तर्गत, छोटे राजा या देश महान सम्राट के सेवकों के रूप में सेवा करते थे।

बाइबल का प्राचीन संसार सम्राटों का संसार था, और इस राजनैतिक यथार्थ ने प्राचीन पूर्व की भूमि को इतना जकड़ रखा था कि इसने जीवन के बारे में लोगों के लगभग हर सोच-विचार को प्रभावित किया। साम्राज्यों की स्थापना, उन्हें कायम रखने और उनके संचालन की रीतियों के बारे में यह बिल्कुल सत्य था। प्राचीन संसार में, महान राजा जैसे मिस्र के फिरौन, हित्तियों के ताकतवर राजा, या अश्शूर के सम्राट कमजोर जातियों या राज्यों को जीतकर या साथ मिलाकर अपने राज्यों को बढ़ाते थे। नि:सन्देह, प्रत्येक अन्तर्राष्ट्रीय संबंध को बिल्कुल इसी प्रकार नहीं निपटा जाता था, परन्तु उन में से बहुतों का प्रबन्ध और उनकी औपचारिकता इन्हीं सन्धियों के द्वारा की जाती थी जिन्हें आज हम सुजरेन-वासल सन्धियाँ कहते हैं। सुजरेन-वासल सन्धियाँ पुराने नियम के अध्ययन के लिए कई कारणों से महत्वपूर्ण हैं, परन्तु हमारी दिलचस्पी मुख्यत: एक विचार के बारे में है: सुजरेन-वासल सन्धियों को राजाओं द्वारा अपने राज्यों के संचालन के लिए बनाया जाता था।

अब इन शाही प्रबन्धों के स्वाद को पाने के लिए, सुजरेन-वासल सन्धियों की विषय सूची का वर्णन करना सहायक होगा। दुर्लभ अपवादों के साथ, इन प्राचीन सन्धियों की औपचारिक विशेषताएँ लगभग एक समान तीन-स्तरीय प्रारूप के अनुसार होती थीं। पहले, शाही उदारता पर बल के साथ, सम्राट ने अपने वासलों के साथ जो दया दिखाई थी, इन सन्धियों का परिचय दिया जाता था। उनकी शुरूआत

एक प्रस्तावना से होती थी, जिस में राजा स्वयं को महिमामय शासक के रूप में दिखाता था, जो स्तुति के योग्य था। और इतिहास में निश्चित पड़ावों पर, प्रस्तावना के बाद एक ऐतिहासिक आमुख होता था जिस में राजा बहुत सी अच्छी बातों का वर्णन करता था जिन्हें उसने प्रजा के लिए किया था।

सुजरेन-वासल सन्धि का दूसरा मुख्य भाग वासल की वफादारी की जरूरत पर ध्यान केन्द्रित करता था; वे सम्राट के वासलों के लिए आज्ञापालन के प्रकारों को बताते थे। नियमों और कानूनों की सूचियाँ यह समझाने के लिए दी जाती थीं कि सुजरेन के राज्य में वासलों से किस प्रकार का जीवन अपेक्षित था।

सुजरेन-वासल सन्धि का तीसरा मुख्य भाग वासलों की वफादारी और विश्वासघात के परिणामों की ओर ध्यान खींचती थी। वफादार सेवकों से आशीषों या प्रतिफलों की प्रतिज्ञा की जाती थी, परन्तु विश्वासघाती सेवकों को स्राप या उनके सम्राटों की ओर से विभिन्न प्रकार की सजाओं की धमकी दी जाती थी।

अब इन सन्धियों में दूसरे अवयव भी आते हैं। उदाहरण के लिए, सन्धि के प्रलेखों को सुरक्षित रखने का प्रबन्ध किया जाता था, और सन्धि के विभिन्न पक्षों पर नजर रखने के लिए दिव्य गवाहों को बुलाया जाता था ताकि सन्धियों को भुला न दिया जाए। परन्तु सुजरेन-वासल संबंध की मुख्य बात को इस प्रकार बताया जा सकता है। महान राजा अपने वासल कमजोर राजाओं और देशों के प्रति अपनी उदारता की घोषणा करते थे। सुजरेन अपने वासलों से वफादार सेवा की माँग करते थे क्योंकि उन्होंने दया दिखाई थी। और अपने वासलों की वफादारी और विश्वासघात के बहुत से सकारात्मक और नकारात्मक परिणामों को बताते थे। जैसा हम देखेंगे, सुजरेन-वासल सन्धियों की ये तीन केन्द्रिय विशेषताएँ पुराने नियम की वाचाओं की प्रकृति और परमेश्वर के राज्य से उनके संबंध को अधिक स्पष्टता से समझने में हमारी सहायता करेंगी।

सुजरेन-वासल सन्धियों के मूल विचार को ध्यान में रखते हुए, हम इस स्थिति में हैं कि हम उनके द्वारा प्रस्तुत अन्तर्दृष्टियों को देख सकें जब हम वाचाओं और परमेश्वर के राज्य के बीच संबंधों की खोजबीन करते हैं।

बाइबल-आधारित अन्तर्दृष्टियाँ

अब आरम्भ में ही हमें कहना चाहिए कि वृहद् अर्थ में वाचा (या बेरीत) शब्द विभिन्न प्रकार के संबंधों का वर्णन करता है। यह मित्रों, पति-पत्नी, राजनेताओं, कबीलों और देशों के बीच संबंधों की ओर संकेत करता है। इन सारे संबंधों को पुराने नियम में वाचा कहा जाता था क्योंकि वे लोगों को पारस्परिक दायित्वों और अपेक्षाओं में औपचारिक रूप से बाँधती थीं, परन्तु ये संबंध इतने भिन्न थे कि उनकी वाचाओं में भी अन्तर था। और इससे बढ़कर, पवित्र वचन कभी-कभी इन विविध वाचा के संबंधों की तुलना परमेश्वर के अपने लोगों से संबंध से करता है। उदाहरण के लिए, परमेश्वर के साथ हमारे संबंध का वर्णन, विवाह, पारिवारिक रिश्ते, और मित्रता के रूप में किया गया है। अतः, हम इन विविध प्रकार की वाचाओं से अपने और परमेश्वर के बारे में बहुत कुछ सीख सकते हैं।

परन्तु इस अध्याय में हमारी दिलचस्पी रूपकों की वृहद् श्रृंखला में नहीं, बल्कि पुराने नियम में वाचा के एक विशिष्ट प्रकार, यानि दिव्य वाचाओं में है। ये वे वाचाएँ हैं जो स्वयं परमेश्वर ने लोगों के साथ बाँधीं। परमेश्वर ने पुराने नियम में ऐसी छह बड़ी सामूहिक वाचाओं को बाँधा। उसने आदम, नूह, अब्राहम, मूसा, दाऊद और मसीह से वाचा बाँधी। इस अध्याय में हमारी रूचि प्राथमिक रूप से इन वाचाओं के स्वभाव और परमेश्वर के राज्य से उनके संबंध को समझना है।

अब, इस अध्याय में हम इन छहों दिव्य वाचाओं को देखेंगे। परन्तु इस बिन्दू पर, हम इन में से एक वाचा, मूसा के साथ बाँधी गई वाचा को संक्षेप में देखेंगे, यह दिखाने के लिए कि सुजरेन-वासल

सन्धियों ने पुराने नियम की वाचाओं के स्वभाव को समझने में किस प्रकार हमारी सहायता की है। मूसा के साथ बाँधी गई वाचा विशेषत: हमारे उद्देश्यों के अनुरूप है क्योंकि परमेश्वर ने पुराने नियम में किसी भी अन्य वाचा से अधिक इसके बारे में प्रकट किया है।

जब हम मूसा के साथ बाँधी गई परमेश्वर की वाचा को देखते हैं, तो जल्द ही यह स्पष्ट हो जाता है कि इसकी संरचना प्राचीन पूर्व की सुजरेन-वासल सन्धियों से मिलती-जुलती है। मूसा की वाचा भी उन्हीं तीन मुख्य तत्वों से बनी है जिन्हें हम इन सन्धियों में देख चुके हैं। यह समानता हमें इस बात को समझने में सहायता करती है कि मूलभूत अर्थ में, परमेश्वर की वाचाएँ उस प्रकार की थीं, जिस प्रकार इस्राएल के महान सम्राट के रूप में, उसने अपने राज्य का संचालन करने का निर्णय लिया था।

इस बिन्दू पर हमारे लिए विशेष रूप से एक पद्यांश को देखना सहायक होगा जो इस समानता को प्रकट करता है। निर्गमन अध्याय 19 पद 4 से 6 में परमेश्वर ने मूसा के द्वारा इस्राएल के साथ इस प्रकार अपनी वाचा बाँधी:

> "तुम ने देखा है कि मैं ने मिस्रियों से क्या-क्या किया; तुम को मानो उकाब पक्षी के पंखों पर चढ़ाकर अपने पास ले आया हूँ। इसलिए अब यदि तुम निश्चय मेरी मानोगे, और मेरी वाचा का पालन करोगे, तो सब लोगों में से तुम ही मेरा निज धन ठहरोगे; समस्त पृथ्वी तो मेरी है। और तुम मेरी दृष्टि में याजकों का राज्य और पवित्र जाति ठहरोगे।" **(निर्गमन 19:4-6)**

ये पद एक दृश्य को दिखाते हैं जहाँ परमेश्वर ने इस्राएल के साथ वाचा बाँधी जब वे वायदे के देश की यात्रा के दौरान सीनै पर्वत के नीचे एकत्रित थे, और ये सुजरेन-वासल सन्धि के तीन केन्द्रिय अवयवों को निकटता से प्रतिबिम्बित करते हैं।

आपको याद होगा कि सुजरेन वासल सन्धियों में तीन मुख्य बातें थीं: शाही उदारता की प्रस्तुति, वासल की वफादारी की माँग, तथा वफादारी और विश्वासघात के परिणाम, और रूचिकर रूप से, यही तीन बातें मूसा की वाचा में प्रकट होती हैं जब निर्गमन 19:4-6 में इसका परिचय दिया गया था।

पहले, परमेश्वर इस्राएल को अपनी दिव्य उदारता के बारे में याद दिलाता है जिसे उसने उन्हें मिस्र में दासत्व से छुटकारा देकर दिखाया था। जैसा उसने निर्गमन 19:4 में कहा:

> "तुम ने देखा है कि मैं ने मिस्रियों से क्या-क्या किया; तुम को मानो उकाब पक्षी के पंखों पर चढ़ाकर अपने पास ले आया हूँ।" **(निर्गमन 19:4)**

प्राचीन पूर्व के सम्राटों के समान, परमेश्वर ने इस्राएलियों को याद दिलाया कि वह उनका दयालु राजा था; इस्राएल को मिस्र से छुड़ाने के लिए उसने महान कार्य किए थे, और अपने लोगों के प्रति इसी उदारता के सन्दर्भ में उसने उनके सामने वाचा का प्रस्ताव रखा।

दूसरा, परमेश्वर ने मानवीय वफादारी की माँग रखी। निर्गमन 19:5 को पुन: देखें:

> "इसलिए अब यदि तुम निश्चय मेरी मानोगे, और मेरी वाचा का पालन करोगे, तो सब लोगों में से तुम ही मेरा निज धन ठहरोगे।" **(निर्गमन 19:5)**

प्राचीन पूर्व के सुजरेन के समान, परमेश्वर ने अपने मानवीय वासलों से वफादारी की माँग रखी। यद्यपि मूसा की वाचा परमेश्वर की करूणा पर आधारित थी और मनुष्यों के अच्छे कार्यों पर नहीं, फिर भी परमेश्वर ने अपने सेवकों के वफादार होने की माँग रखी और मूसा की व्यवस्था ने उन्हें अपनी वफादारी को दिखाने के कई तरीकों के बारे में बताया। लोगों से वाचा के नियमों का पालन करना अपेक्षित था।

तीसरा, मूसा की वाचा में परमेश्वर के लोगों की वफादारी और विश्वासघात के परिणाम भी शामिल थे। यह अवयव निर्गमन 19:5 और 6 में स्पष्ट है:

> "इसलिए अब यदि तुम निश्चय मेरी मानोगे, और मेरी वाचा का पालन करोगे, तो सब लोगों में से तुम ही मेरा निज धन ठहरोगे; समस्त पृथ्वी तो मेरी ही है। और तुम मेरी दृष्टि में याजकों का राज्य और पवित्र जाति ठहरोगे।" (निर्गमन 19:5-6)

प्राचीन पूर्वी सम्राटों के समान, परमेश्वर ने स्पष्ट किया कि यदि लोग वफादार रहेंगे, तो उन्हें बहुत सी आशीषें मिलेंगी-वे निज धन होंगे, याजकों का राज्य होंगे। और निहितार्थ के अनुसार, यदि वे विश्वासधाती हुए, तो ये आशीषें उन्हें नहीं मिलेंगी बल्कि वे शापित ठहरेंगे।

अत:, हम देखते हैं कि सुजरेन-वासल सन्धियों का तीन-स्तरीय नमूना मूसा के साथ परमेश्वर की वाचा में प्रकट होता है। जैसे सुजरेन अपने वासलों के प्रति दयावन्त होने का दावा करते थे, उसी प्रकार जब परमेश्वर ने इस्राएल के साथ वाचा बाँधी, तो उसने पहले उनके प्रति दिव्य उदारता को स्थापित किया। वाचा आगे परमेश्वर के प्रति मानवीय वफादारी की अपेक्षाओं को बताती है, और वाचा लोगों की परमेश्वर के प्रति वफादारी या विश्वासघात के फलस्वरूप आने मिलने वाली आशीषों और स्रापों का वर्णन करती है।

मूसा की वाचा द्वारा सुजरेन-वासल सन्धियों के इन अवयवों को प्रतिबिम्बित करने का तथ्य प्रदर्शित करता है कि मूलभूत स्तर पर, जब परमेश्वर ने अपने लोगों के साथ वाचा बाँधी, उसने अपने आप को उनके महान राजा, सम्राट के रूप में इस्राएल पर प्रकट किया, और वह चाहता था कि लोग अपने आप को उसके वासल मानें। पुराने नियम की दिव्य वाचाएँ शाही व्यवस्थाएँ थीं। राज्य और वाचाएँ एक साथ चलती हैं क्योंकि वाचाएँ वे माध्यम हैं जिनके द्वारा परमेश्वर अपने राज्य पर शासन करता था। वे परमेश्वर के राज्य का प्रशासन थीं, जो परमेश्वर के राज्य को पृथ्वी की छोर तक फैलाने की उसकी नियति की ओर बढ़ा रही थीं।

अब यह देखने के बाद कि दिव्य वाचाओं का मूलभूत कार्य परमेश्वर के राज्य में जीवन को नियंत्रित करना था, हम अपने दूसरे शीर्षक को देख सकते हैं: पुराने नियम में वाचाओं का ऐतिहासिक विकास।

वाचाओं का इतिहास

जैसा हम पिछले अध्याय में देख चुके हैं, पुराने नियम में परमेश्वर के राज्य का इतिहास बहुत जटिल था। सम्पूर्ण पृथ्वी पर पहुँचने के लक्ष्य की ओर विकास के दौरान परमेश्वर का राज्य विविध कालों या अवधियों से गुजरा। इस बिन्दू पर, हम देखेंगे कि राज्य में प्रत्येक काल या चरण में, परमेश्वर ने उन विशिष्ट मुद्दों से संबंधित वाचाओं को बाँधा जिनका लोग राज्य के प्रत्येक चरण में सामना कर रहे थे। पुराने नियम में दिव्य वाचाओं के इतिहास को देखने के कई तरीके हैं। हम इस इतिहास को तीन मुख्य चरणों में देखेंगे: पहला, सार्वभौमिक वाचाएँ; दूसरा, राष्ट्रीय वाचाएँ; और तीसरा, नई वाचा।

जैसा हम पहले ही बता चुके हैं, छह मुख्य दिव्य वाचाएँ हैं जो पुराने नियम के सम्पूर्ण इतिहास में फैली हैं: आदम, नूह, अब्राहम, मूसा, दाऊद और मसीह के साथ परमेश्वर की वाचाएँ। हम इन छह वाचाओं को पिछले अध्याय में वर्णित परमेश्वर के राज्य के ऐतिहासिक चरणों के अनुरूप तीन समूहों में बाँटेंगे: हम प्राचीन इतिहास के दौरान आदम और नूह के साथ की सार्वभौमिक वाचाओं की बात करेंगे; हम उस समय के दौरान अब्राहम, मूसा और दाऊद के साथ की राष्ट्रीय वाचाओं की बात करेंगे जब

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट thirdmill.org पर जाएँ।

परमेश्वर ने पुराने नियम इस्राएल की जाति को अपने विशेष लोगों के रूप में अपनी ओर खींचा; और हम राज्य के नये नियम की अवस्था के दौरान मसीह में नई वाचा की बात करेंगे। अत:, इन दिव्य वाचाओं को देखते समय हम पुराने नियम के इतिहास में वाचाओं के इन तीनों समूहों में से प्रत्येक के विकास को देखेंगे। आइए पहले हम उन सार्वभौमिक वाचाओं को देखते हैं जिन्हें परमेश्वर ने प्राचीन इतिहास के दौरान बाँधा था।

सार्वभौमिक वाचाएँ

हम आदम और नूह के साथ की वाचा को "सार्वभौमिक" इसलिए कहते हैं क्योंकि वे परमेश्वर और सारी मानवता के बीच थीं। प्राचीन काल के दौरान, इन वाचाओं को बाँधने के समय, परमेश्वर ने इस्राएल को अपने विशेष लोगों के रूप में अलग नहीं किया था। बल्कि, आदम और नूह, हर गोत्र और जाति के प्रत्येक व्यक्ति का प्रतिनिधित्व करते थे। इसके परिणामस्वरूप, उनके साथ जो हुआ उसका प्रभाव उनके बाद आने वाले हर मनुष्य पर पड़ा।

इन सार्वभौमिक वाचाओं ने प्राचीन काल के दौरान परमेश्वर के राज्य के संचालन की आवश्यकता को पूरा किया। यह वह समय था जब परमेश्वर ने सम्पूर्ण मानव जाति के साथ सदा के लिए अपने संबंध का नियमन करने वाले सर्वाधिक मूलभूत प्रबन्धों को स्थापित किया। हम इन सार्वभौमिक वाचाओं को समय क्रम के अनुसार देखेंगे, आदम से आरम्भ करके फिर नूह की ओर बढ़ेंगे। आइए पहले हम आदम के साथ परमेश्वर की वाचा को देखते हैं।

आदम

जैसा हम सब जानते हैं, आदम परमेश्वर द्वारा बनाया गया पहला मनुष्य था, अत: जब हम आदम के साथ बाँधी वाचा के बारे में बात करते हैं, तो हम मानवीय इतिहास के आरम्भिक काल की बात कर रहे हैं। और कोई आश्चर्य नहीं, हम पाते हैं कि आदम की वाचा के बारे में बाइबल की शिक्षा मानवीय जीवन के कुछ सर्वाधिक मूल या आधारभूत आयामों पर केन्द्रित है।

आदम के साथ की वाचा उत्पत्ति के प्रथम तीन अध्यायों में पाये जाने वाले सृष्टि के लेखों में आती है। अब, हमें यह बताना चाहिए कि कुछ मसीही इस बात से सहमत नहीं हैं कि परमेश्वर ने आदम के साथ एक औपचारिक वाचा बाँधी। इन में से अधिकाँश विश्वासियों के विचार इस तथ्य पर आधारित हैं कि "वाचा" शब्द उत्पत्ति के प्रथम तीन अध्यायों में नहीं है, और कुछ यह तर्क भी देते हैं कि दिव्य वाचा के मूल स्वरूपों को इन अध्यायों में नहीं पाया जा सकता है। लेकिन, प्रमाण के तीन अंश दृढ़ सुझाव देते हैं कि मानवता के प्रतिनिधि के रूप में आदम के साथ वास्तव में परमेश्वर ने वाचा बाँधी। पहला, जैसे हम इस अध्याय में बाद में देखेंगे, दिव्य वाचाओं के मूल अवयव निश्चित रूप से उत्पत्ति 1 से 3 अध्यायों में उपस्थित हैं; दिव्य उदारता, मानवीय वफादारी, और वफादारी तथा विश्वासघात के परिणाम इन अध्यायों में दिए गए हैं।

परमेश्वर द्वारा आदम के साथ वाचा बाँधने का दूसरा प्रमाण होशे 6:7 में मिलता है। वहाँ हम पढ़ते हैं:

> "परन्तु उन लोगों ने आदम (या "मानवता,' जैसा इसका अनुवाद किया जा सकता है), के समान वाचा को तोड़ दिया; उन्होंने वहाँ मुझ से विश्वासघात किया है।" (होशे 6:7)

यह पद्यांश इस्राएल के पापों की तुलना अदन की वाटिका में आदम के पाप से करता है, और दोनों को वाचा तोड़ने के रूप में बताता है। इस्राएल ने भी वाचा को तोड़ दिया था जैसा अदन की वाटिका में आदम ने किया था।

परमेश्वर द्वारा आदम के साथ वाचा बाँधने का तीसरा प्रमाण उत्पत्ति 6:18 में मिलता है। उत्पत्ति 6:18 में, जो बाइबल का पहला पद्यांश है जहाँ "वाचा" शब्द यथार्थ में आता है, परमेश्वर ने नूह से इस प्रकार कहा:

> "परन्तु तेरे संग मैं वाचा बाँधता हूँ।" (उत्पत्ति 6:18)

यह पद्यांश महत्वपूर्ण है क्योंकि अनुवादित शब्द "बाँधता हूँ" का सामान्य अर्थ वाचा को "आरम्भ करना" या "पहल करना" नहीं है बल्कि पहले से ही विद्यमान वाचा की "पुष्टि करना" है। नूह की वाचा को पहले से ही विद्यमान वाचा, यानि परमेश्वर द्वारा आदम के साथ बाँधी गई वाचा की पुष्टि के रूप में प्रस्तुत किया गया था।

आदम के साथ दिव्य व्यवस्था को चाहे हम "वाचा" कहें या नहीं, यह स्पष्ट है कि परमेश्वर ने आदम, जो सम्पूर्ण मानव जाति का प्रतिनिधि था, के साथ एक औपचारिक संबंध को शुरू किया। आदम के साथ इस व्यवस्था या वाचा का केन्द्र मनुष्यों के साथ परमेश्वर के संबंध की सर्वाधिक मूलभूत विशेषताओं को स्थापित करना था, और इस कारण, इसे हम आधारों की वाचा कह सकते हैं। इस वाचा में, परमेश्वर ने इस संसार में रहने वाले सारे मनुष्यों के लिए जीवन के आधारभूत नमूनों को स्थापित किया। आदम और हव्वा को परमेश्वर के शाही और याजकीय स्वरूपों के रूप में सेवा करने और उसके राज्य को पृथ्वी की छोर तक फैलाने के लिए नियुक्त किया गया। उन्हें परखा गया और वे असफल हो गए। अपने विद्रोह के कारण उन्होंने कष्ट सहा, लेकिन उन्हें आशा दी गई। साराँश में, आदम के साथ बाँधी गई वाचा ने सदा के लिए परमेश्वर के साथ मनुष्यों के संबंध के कायदों को निर्धारित किया। इसने उसके राज्य में हमारी भूमिका के आधारों को स्थापित किया।

नूह

दूसरी सार्वभौमिक वाचा नूह के साथ परमेश्वर की वाचा है। इस वाचा के बारे में बहुत कुछ कहा जा सकता है, परन्तु हम केवल उन केन्द्रिय मुद्दों का परिचय देंगे जो बाइबल के लेख में सामने आते हैं। नूह की वाचा भी परमेश्वर के राज्य की आदिम अवधि में स्थापित की गई थी और सर्वाधिक मूलभूत मुद्दों से संबंधित थी जिनका सारे मनुष्यों से सामना होता है।

नूह के साथ परमेश्वर की वाचा का वर्णन उत्पत्ति के दो अध्यायों में किया गया है, उत्पत्ति 6 और 9 अध्यायों में। देखें परमेश्वर ने उत्पत्ति 6:18 में क्या कहा है:

> "परन्तु तेरे संग मैं वाचा बाँधता हूँ; इसलिए तू अपने पुत्रों, स्त्री, और बहुओं समेत जहाज में प्रवेश करना।" (उत्पत्ति 6:18)

जैसा हम पहले ही बता चुके हैं, नूह की वाचा कोई नई वाचा नहीं थी, जो स्वयं पर आधारित थी। यह वास्तव में आदम के साथ परमेश्वर की व्यवस्था या वाचा की स्थापना या उसका विस्तार था।

नूह के साथ इस वाचा का केन्द्र क्या था? इस प्रश्न के उत्तर को हम जल-प्रलय के बाद देखते हैं, जब परमेश्वर ने वास्तव में वाचा को बाँधा। उत्पत्ति 9:9-11 में हम उस वाचा के इस लेख को पढ़ते हैं :

> "मैं तुम्हारे साथ और तुम्हारे पश्चात् जो तुम्हारा वंश होगा, उसके साथ भी वाचा बाँधता हूँ; और सब जीवित प्राणियों से भी ... और मैं तुम्हारे साथ अपनी यह वाचा बाँधता हूँ कि सब प्राणी फिर जल-प्रलय से नष्ट न होंगे।" (उत्पत्ति 9:9-11)

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट thirdmill.org पर जाएँ।

जैसा हम यहाँ देखते हैं, नूह के साथ परमेश्वर की वाचा ने उस समय के बाद से प्रत्येक जीवित प्राणी पर महत्वपूर्ण रीतियों से प्रभाव डाला।

नूह की वाचा को सृष्टि के क्रम में स्थिरता को सुनिश्चित करने के लिए बाँधा गया था, और इसलिए इसे स्थिरता की वाचा कहना उचित ही है। जैसे आपको याद होगा, एक पिछले अध्याय में हमने देखा कि जब नूह और उसका परिवार जहाज से निकला, तब परमेश्वर ने पाप के प्रति मनुष्यों के तीव्र झुकाव को देखा, और अपने राज्य के उद्देश्यों को पूरा करने के लिए दीर्घकालीन रणनीति को प्रकट किया। जैसा हम उत्पत्ति 8: 21 और 22 में पढ़ते हैं:

> "मनुष्य के कारण मैं फिर कभी भूमि को शाप न दूँगा, यद्यपि मनुष्य के मन में बचपन से जो कुछ उत्पन्न होता है वह बुरा ही होता है; तौभी जैसा मैं ने सब जीवों को अब मारा है, वैसा उनको फिर कभी न मारूँगा। अब से जब तक पृथ्वी बनी रहेगी, तब तक बोने और काटने के समय, ठण्ड और तपन, धूपकाल और शीतकाल, दिन और रात, निरन्तर होते चले जाएँगे।" (उत्पत्ति 8:21-22)

इस नीति को सुरक्षित बनाने के लिए, परमेश्वर ने यह वायदा करते हुए नूह के साथ वाचा बाँधी, कि प्रकृति स्थिर रहेगी ताकि मानव जाति इस गिरे हुए संसार में अपनी नियति तक पहुँच सके। इस सार्वभौमिक वाचा ने, आदम की वाचा के समान, मानवीय अस्तित्व के लिए मूलभूत संरचनाओं को स्थापित किया जो सब स्थानों और सब समयों के सब लोगों पर लागू होती हैं।

अब यह देखने के बाद कि किस प्रकार परमेश्वर ने अपने राज्य के मूलभूत क्रम को स्थापित किया और आदम तथा नूह के साथ वाचा बाँधकर अपने राज्य के उद्देश्यों को सुरक्षित किया, हमें अपना ध्यान राज्य के उस काल की ओर मोड़ना चाहिए जब पुराना नियम इस्राएल केन्द्रिय स्थान में आया।

राष्ट्रीय वाचाएँ

जैसे-जैसे परमेश्वर का राज्य प्राचीन इतिहास से उस अवधि की ओर बढ़ा जिस में परमेश्वर ने विशेष रूप से इस्राएल जाति पर ध्यान दिया, तब परमेश्वर ने तीन राष्ट्रीय वाचाओं को बाँधा। हम इन्हें "राष्ट्रीय वाचाएँ" कह सकते हैं क्योंकि वे विशेषत: परमेश्वर के चुने हुए विशेष लोगों के रूप में इस्राएल से संबंधित थीं। हम राष्ट्रीय वाचाओं को उनके समय क्रम के अनुसार देखेंगे, अब्राहम की वाचा से आरम्भ करके, फिर मूसा और अन्त में दाऊद की ओर बढ़ेंगे।

अब्राहम

पहली वाचा अब्राहम के साथ बाँधी गई थी इसलिए अब्राहम को सारे इस्राएल के पिता के रूप में माना जाता है। हम अब्राहम की वाचा के स्पष्ट उल्लेखों को उत्पत्ति 15 और 17 अध्यायों में पाते हैं। अब्राहम के साथ परमेश्वर की वाचा का पहला वर्णन उत्पत्ति 15:18 में दिया गया है:

> उस दिन यहोवा ने अब्राम के साथ वाचा बाँधी। (उत्पत्ति 15:18)

यहाँ दी गई अभिव्यक्ति "वाचा बाँधी," या शाब्दिक रूप में "वाचा शुरू की," वाचा के संबंध के आरम्भ का संकेत देने की सामान्य रीति है। फिर, कुछ वर्षों पश्चात्, पुरखों के साथ अपनी वाचा को स्पष्ट किया। उत्पत्ति 17:1 और 2 में हम इन वचनों को पढ़ते हैं:

> "मैं सर्वशक्तिमान ईश्वर हूँ, मेरी उपस्थिति में चल और सिद्ध होता जा। मैं तेरे साथ अपनी वाचा की पुष्टि करूँगा।" (उत्पत्ति 17:1-2)

इस पद्यांश में परमेश्वर ने उस वाचा की “पुष्टि की” या उसे “स्थिर किया” जो उसने उत्पत्ति 15 में अब्राहम के साथ बाँधी थी। इसी शब्द को हमने उत्पत्ति 6:18 में देखा जब परमेश्वर ने आदम के साथ पूर्व में बाँधी गई वाचा की नूह के साथ पुष्टि की।

अब्राहम की वाचा महत्वपूर्ण थी क्योंकि उसने सम्पूर्ण पृथ्वी पर परमेश्वर के स्वर्गीय राज्य को लाने के लिए परमेश्वर के विशेष उपकरणों के रूप में इस्राएल को पृथ्वी की सारी जातियों से अलग किया। इस प्रक्रिया में पहला कदम अब्राहम से वंशजों की एक विशाल भीड़ और राज्य के निर्माण के लिए एक देश का वायदा करने के द्वारा देश के एक दर्शन को उत्पन्न करना था, और इस कारण अब्राहम की वाचा को प्रतिज्ञा की वाचा के रूप में वगीकृत किया जा सकता है। जैसा हम उत्पत्ति 15:18 में पढ़ते हैं:

> **इसी दिन यहोवा ने अब्राम के साथ यह वाचा बाँधी, “यह देश मैं ने तेरे वंश को दिया है।” (उत्पत्ति 15:18)**

और उत्पत्ति 17:2 में:

> **I will confirm my covenant between me and you and will greatly increase your numbers (Genesis 17:2).**

इन वाचाई वायदों ने परमेश्वर के राज्य के लोगों के रूप में इस्राएल की सारी आशाओं के लिए एक स्थाई दर्शन को उत्पन्न किया।

मूसा

इस्राएली गोत्रों के मिस्र में जाने और वहाँ गुलामी को सहने के बाद, परमेश्वर उन्हें राष्ट्रीय वाचा के दूसरे चरण, मूसा की वाचा पर लाया। मूसा की वाचा कई अर्थों में अब्राहम की वाचा से घनिष्टता से जुड़ी थी, इसने अब्राहम की वाचा को आगे बढ़ाया। मूसा ने स्वयं को कोई नई शुरूआत करने वाले के रूप में नहीं देखा। इसके विपरीत, उसने राज्य के लिए स्वयं के कार्यों के आधार के रूप में बारम्बार अब्राहम के साथ की वाचा को याद दिलाया। देखें निर्गमन 32:13 में मूसा ने इस्राएल के लिए परमेश्वर से किस प्रकार विनती की :

> **“अपने दास अब्राहम, इसहाक, और याकूब को स्मरण कर जिनसे तू ने अपनी ही शपथ खाकर यह कहा था, “मैं तुम्हारे वंश को आकाश के तारों के तुल्य बहुत करूँगा, और यह सारा देश जिसकी मैं ने चर्चा की है तुम्हारे वंश को दूँगा कि वे उसके अधिकारी सदैव बने रहें।’” (निर्गमन 32:13)**

मूसा के साथ की राष्ट्रीय वाचा कोई नई वाचा नहीं थी जिसने अब्राहम के साथ की वाचा का स्थान ले लिया। बल्कि, यह परमेश्वर द्वारा पूर्व में अब्राहम के अधीन इस्राएल के साथ बाँधी गई राष्ट्रीय वाचा पर आधारित थी और उसके साथ सामंजस्यपूर्ण थी।

हम परमेश्वर के मूसा के द्वारा इस्राएल के साथ वाचा बाँधने के प्राथमिक अभिलेख को निर्गमन 19 से 24 अध्यायों में पाते हैं। जब परमेश्वर ने बारह गोत्रों को सीनै पर्वत के नीचे एकत्रित किया, तो वह उन्हें एक देश, राजनैतिक रूप से एकीकृत जाति बना रहा था। यद्यपि मूसा के समय के पहले से ही परमेश्वर के लोगों के लिए कायदे-कानून थे, लेकिन प्रत्येक नये देश के समान, इस समय इस्राएल की मुख्य आवश्यकता कानून की एक प्रणाली थी, देश में जीवन का नियमन करने के लिए नियमों का संग्रह। अत: परमेश्वर ने इस्राएल को दस आज्ञाएँ और देश का मार्गदर्शन करने के लिए वाचा की पुस्तक दी। इस कारण, मूसा की वाचा को व्यवस्था की वाचा कहा जा सकता है।

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट thirdmill.org पर जाएँ।

वास्तव में, मूसा की वाचा ने व्यवस्था पर इतना अधिक बल दिया कि जब इस्राएल के लोग इस वाचा को बाँधने के लिए सहमत हुए, तो उनका समर्पण परमेश्वर की व्यवस्था के प्रति समर्पण के रूप में आया। निर्गमन 19:7 और 8 में बताया गया है :

> तब मूसा ने... ये सब बातें, जिनके कहने की आज्ञा यहोवा ने उसे दी थी, उनको समझा दीं। और सब लोग मिलकर बोल उठे, "जो कुछ यहोवा ने कहा है वह सब हम नित करेंगे।" (निर्गमन 19:7-8)

अत: हम देखते हैं कि इस्राएल देश के साथ दूसरी वाचा मूसा की वाचा थी, जिसने परमेश्वर की व्यवस्था पर बल दिया।

दाऊद

अब हमें उस वाचा की ओर मुड़ना चाहिए जो राजा दाऊद के दिनों में इस्राएल में आई थी, जब इस्राएल पूरी तरह एक साम्राज्य बन गया था।

अब, दाऊद की वाचा भी एक राष्ट्रीय वाचा थी और इसलिए मूसा की वाचा से घनिष्टता से जुड़ी थी। जैसे सुलैमान ने 2 इतिहास 6:16 में इसे स्पष्ट किया, दाऊद को दिए गए परमेश्वर के वायदे मूसा की व्यवस्था के प्रति विश्वासयोग्यता पर निर्भर थे। वहाँ हम पढ़ते हैं:

> "इसलिए अब हे इस्राएल के परमेश्वर यहोवा, इस वचन को भी पूरा कर, जो तू ने अपने दास मेरे पिता दाऊद को दिया था, "तेरे कुल में मेरे सामने इस्राएल की गद्दी पर विराजनेवाले सदा बने रहेंगे, यह हो कि जैसे तू अपने को मेरे सम्मुख जानकर चलता रहा, वैसे ही तेरे वंश के लोग अपनी चाल चलन में ऐसी चौकसी करें, कि मेरी व्यवस्था पर चलें।'" (2 इतिहास 6:16)

दाऊद की वाचा इस्राएल जाति के साथ बाँधी गई पूर्व की वाचाओं पर निर्मित थी।

हमें यह सटीक जानकारी नहीं है कि परमेश्वर ने कब दाऊद के जीवन में इस वाचा को औपचारिक रूप से बाँधा, परन्तु एक पद्यांश जो स्पष्टता से दाऊद की वाचा की विषय सूची को बताता है वह भजन 89 है। भजन 89 के 3 और 4 पदों में दाऊद से परमेश्वर के वायदे को इन शब्दों में प्रस्तुत किया गया है :

> "मैंने अपने चुने हुए से वाचा बाँधी है, मैंने अपने दास दाऊद से शपथ खाई है, "मैं तेरे वंश को सदा स्थिर रखूँगा; और तेरी राजगद्दी को पीढ़ी से पीढ़ी तक बनाए रखूँगा।'" (भजन 89:3-4)

यह पद्यांश संकेत देता है कि दाऊद की वाचा इस्राएल में राजपद पर केन्द्रित थी। या अधिक विशिष्ट रूप में, इसने दाऊद से वायदा किया कि उसका वंश इस्राएल में सदा के लिए राज करेगा। जब दाऊद परमेश्वर के लोगों पर राजा बना, उसने इस्राएल को एक साम्राज्य में बदलकर जाति को आशीष दी, यानि, वह उन्हें राज्य विकास के उच्च स्तर पर ले गया। और इस राष्ट्रीय आशीष के भविष्य को सुरक्षित रखने के लिए परमेश्वर ने राजाओं के स्थाई उत्तराधिकार की स्थिरता, राजवंश की प्रतिज्ञा की। अत: दाऊद की वाचा को हम इस्राएल की राजपद की वाचा कह सकते हैं।

नई वाचा

अब सार्वभौमिक और राष्ट्रीय वाचाओं की मूलभूत जानकारी प्राप्त होने के बाद, हमें उस वाचा को देखना चाहिए जो परमेश्वर के राज्य के अन्तिम चरण का संचालन करती है: नई वाचा।

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट thirdmill.org पर जाएँ।

उन पाँच वाचाओं के अतिरिक्त जिन्हें हम पहले ही देख चुके हैं, पुराने नियम के भविष्यद्वक्ताओं ने एक नई वाचा के बारे में बताया जो परमेश्वर के राज्य के अन्तिम चरण में आएगी। उन्होंने घोषणा की कि वह उस से पहले आई किसी भी वाचा से महान होगी।

नई वाचा का वर्णन बाइबल में कई स्थानों पर किया गया है, परन्तु यिर्मयाह 31 और यहेजकेल 37 दो अत्यधिक महत्वपूर्ण पद्यांश हैं। यिर्मयाह 31:31 इस "नई वाचा" के बारे में इस प्रकार कहता है :

> "फिर यहोवा की यह भी वाणी है, सुन, ऐसे दिन आने वाले हैं जब मैं इस्राएल और यहूदा के घरानों से नई वाचा बाँधूँगा।" **(यिर्मयाह 31:31)**

और कई अवसरों पर, यहेजकेल भविष्यद्वक्ता इसी वाचा को शान्ति की अनन्त वाचा कहता है। जैसा हम यहेजकेल 37:26 में पढ़ते हैं :

> "मैं उनके साथ शान्ति की वाचा बाँधूँगा; वह सदा की वाचा ठहरेगी; और मैं उन्हें स्थान देकर गिनती में बढ़ाऊँगा, और उनके बीच अपना पवित्रस्थान सदा बनाए रखूँगा।" **(यहेजकेल 37:26)**

और जैसा सारे मसीही जानते हैं, जब पौलुस ने कुरिन्थ के विश्वासियों को प्रभु भोज के समय यीशु के वचनों का स्मरण दिलाया, तो उसने यह स्पष्ट किया कि शान्ति की यह अनन्त नई वाचा मसीह में पूर्ण हो चुकी है। पौलुस ने 1 कुरिन्थियों 11:25 में प्रभु के वचनों को लिखा :

> "यह कटोरा मेरे लहू में नई वाचा है: जब कभी पीओ, तो मेरे स्मरण के लिए यही किया करो।" **(1 कुरिन्थियों 11:25)**

मसीह में इस नई वाचा के द्वारा, परमेश्वर अपने राज्य के अन्तिम चरण में उसका संचालन करता है, जिसे हम नये नियम का समय कहते हैं। नई वाचा को उस समय के दौरान परमेश्वर के लोगों का संचालन करने के लिए बनाया गया था जब परमेश्वर अपने राज्य के उन लक्ष्यों को पूरा करेगा जिन्हें उसने प्राचीन काल में स्थापित किया था और इस्राएल देश के द्वारा आगे बढ़ाया था, और इसी कारण, इसे पूर्णता की वाचा के रूप में देखना सर्वोत्तम है।

यह पूर्णता की वाचा उस समय परमेश्वर के लोगों के संचालन के लिए थी जब परमेश्वर उनकी बँधुवाई को समाप्त करेगा और अपने राज्य का पृथ्वी की छोर तक विस्तार करेगा। नई वाचा परमेश्वर का समर्पण है कि वह अपने लोगों को क्षमा और छुटकारा प्राप्त जाति में रूपान्तरित कर दे जो बिना चूक के उसकी सेवा करने में पूर्णत: समर्थ हो। देखें यिर्मयाह इस रूपान्तरण के बारे में यिर्मयाह 31:31-34 में किस प्रकार वर्णन करता है:

> "फिर यहोवा की यह भी वाणी है, सुन, ऐसे दिन आने वाले हैं जब मैं इस्राएल और यहूदा के घरानों से नई वाचा बाँधूँगा... मैं अपनी व्यवस्था उनके मन में समवाऊँगा, और उसे उनके हृदय पर लिखूँगा; और मैं उनका परमेश्वर ठहरूँगा, और वे मेरी प्रजा ठहरेंगे, यहोवा की यह वाणी है। तब उन्हें फिर एक दूसरे से यह न कहना पड़ेगा कि यहोवा को जानो, क्योंकि, यहोवा की यह वाणी है, छोटे से लेकर बड़े तक, सब के सब मेरा ज्ञान रखेंगे; क्योंकि मैं उनका अधर्म क्षमा करूँगा, और उनका पाप फिर स्मरण न करूँगा।" **(यिर्मयाह 31:31-34)**

अब जैसा हमने पिछले अध्याय में देखा, परमेश्वर के राज्य के इस अन्तिम चरण का आगमन तीन दशाओं में होता है। इसका शुभारम्भ मसीह की संसार में सेवकाई और उसके प्रेरितों के कार्यों से हुआ। यह हमारे समय में जारी है, और यह केवल तभी अपनी पूर्णता तक पहुँचेगा जब मसीह सारी बातों को पूरा

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट thirdmill.org पर जाएँ।

करने के लिए लौटेगा। नये नियम में परमेश्वर के राज्य की इन तीन दशाओं को याद रखना यह समझने के लिए आवश्यक है कि परमेश्वर ने नई वाचा को कैसे स्थापित किया।

विविध रीतियों में, नई वाचा के प्रभाव भी तीन दशाओं में आते हैं। नई वाचा के रूपान्तरण मसीह के प्रथम आगमन में प्रभाव दिखाने लगे, और वे मसीही कलीसिया के सम्पूर्ण इतिहास में जारी हैं। परन्तु नई वाचा की अन्तिम वास्तविकता केवल मसीह के लौटने पर ही प्रकट होगी। उस दिन के आने पर, नई वाचा परमेश्वर की वाचाओं के पूरे इतिहास की सम्पूर्ण पूर्णता होगी। यह आदम, नूह, अब्राहम, मूसा और दाऊद के साथ वाचाओं के संचालन के पीछे के परमेश्वर के उद्देश्यों को पूर्ण करेगी।

यह देखने के बाद कि वाचाएँ वे माध्यम हैं जिनके द्वारा परमेश्वर इतिहास में अपने राज्य का संचालन करता है, हमें अपने तीसरे शीर्षक पर आना चाहिए: वाचाओं के व्यवहार। प्रत्येक वाचा ने परमेश्वर के उसके लोगों के बीच आपसी व्यवहार का किस प्रकार नियमन किया?

वाचा के पहलू

अब इन प्रश्नों के उत्तर देने से पहले, हमें एक महत्वपूर्ण बिन्दू को बताने की आवश्यकता है। कुछ पद्यांश प्रत्यक्ष रूप से उन पलों से संबंधित हैं जब परमेश्वर ने औपचारिक रूप से वाचा बाँधी या उनकी पुष्टि की और ये पद्यांश प्रत्येक वाचा के उस विशेष बल की ओर ध्यान आकर्षित करते हैं। परन्तु वाचा के जीवन के व्यवहारों के बारे में बहुत कुछ सीखा जा सकता है जो इन महत्वों से आगे जाते हैं।

आदम की वाचा ने संसार के आरम्भ में स्थापित कुछ आधारभूत प्रारूपों पर बल दिया। नूह की वाचा ने प्रकृति की स्थिरता पर बल दिया। अब्राहम की वाचा ने परमेश्वर के वायदे पर बल दिया। मूसा की वाचा ने परमेश्वर की व्यवस्था पर बल दिया। दाऊद की वाचा ने परमेश्वर द्वारा चुने हुए विशेष शाही परिवार के रूप में दाऊद के राजवंश पर बल दिया। और नई वाचा ने पूर्णता पर बल दिया। परन्तु ये बल वाचा के जीवन का सम्पूर्ण विवरण नहीं हैं; वे केवल कुछ मुख्य भागों को छूते हैं। वाचा में जीने के व्यवहारों की पूर्ण तस्वीर को पाने के लिए हमें पहचानना होगा कि परमेश्वर के साथ वाचा के जीवन में इन बलों से कहीं अधिक कुछ शामिल है।

परमेश्वर के साथ आदम का वाचा का संबंध केवल आधारभूत विषयों से संबंधित नहीं था। नूह के समय के दौरान, मनुष्य और परमेश्वर के बीच व्यवहार में केवल प्रकृति की स्थिरता ही नहीं थी। अब्राहम के समय में परमेश्वर के साथ संबंध में वायदे से अधिक बहुत कुछ शामिल था। परमेश्वर ने मूसा के काल का संचालन व्यवस्था से कहीं अधिक कुछ ध्यान में रखकर किया। परमेश्वर ने दाऊद के समय में दाऊद के राजवंश के प्रकाश से बढ़कर लोगों से संबंध बनाया। और नई वाचा के परमेश्वर के साथ जीवन उस से कहीं जटिल है जितना कि पूर्णता पर इसका बल संकेत देता है।

वाचा के जीवन का अनुसंधान करते समय, हम देखेंगे कि सारी दिव्य वाचाएँ समान मूलभूत प्रबन्ध, तीन-स्तरीय संरचना का पालन करती हैं जिसे हम प्राचीन पूर्व की सुजरेन-वासल सन्धियों में देख चुके हैं। परमेश्वर के साथ वाचा में जीवन बिताने में सर्वदा परमेश्वर की उदारता, मानवीय वफादारी की माँग, और मानवीय वफादारी या विश्वासघात के परिणाम शामिल थे।

पुराने नियम की वाचाओं के व्यवहारों को जानने के लिए, हम देखेंगे कि ये तीन अवयव पुराने नियम की प्रत्येक वाचा में किस प्रकार प्रकट होते हैं: पहले, हम सार्वभौमिक प्राचीन वाचाओं को देखेंगे; दूसरा, इन्हें हम पुराने नियम इस्राएल के साथ परमेश्वर द्वारा बाँधी गई राष्ट्रीय वाचाओं में देखेंगे; और तीसरा, हम देखेंगे कि ये व्यवहार किस प्रकार मसीह में नई वाचा में उपस्थित हैं। आइए पहले हम प्राचीन सार्वभौमिक वाचाओं को देखते हैं।

सार्वभौमिक वाचाएँ

प्राचीन इतिहास के दौरान परमेश्वर ने आदम के साथ आधारों की वाचा और नूह के साथ प्राकृतिक स्थिरता की वाचा बाँधी। परन्तु इन वाचाओं के अन्तर्गत जीवन में मुद्दों की एक विस्तृत श्रृंखला भी शामिल थी जिन्हें इन शीर्षकों के अन्तर्गत बताया जा सकता है, दिव्य उदारता, मानवीय वफादारी, और मानवीय वफादारी तथा विश्वासघात के परिणाम। हम संक्षेप में देखेंगे कि यह प्रत्येक प्राचीन वाचा के बारे में किस प्रकार सत्य है: पहले, आदम के साथ वाचा, और फिर नूह के साथ वाचा।

आदम

सबसे पहले, परमेश्वर ने प्रथम पुरूष और स्त्री के प्रति उनके पाप करने से पूर्व ही अत्यधिक उदारता दिखाई। उसने संसार को मनुष्य के लिए तैयार किया, उसे अव्यवस्था से एक खूबसूरत क्रम में लाया, और उसने एक भव्य स्वर्ग बनाकर आदम और हव्वा को उसमें रखा, और उनको हर प्रकार के सौभाग्य दिए। दया के इन कार्यों ने मानव जाति के साथ परमेश्वर की प्रथम वाचा के प्रबन्ध का मार्ग तैयार किया।

दूसरा, आदम के साथ वाचा में मानवीय वफादारी की माँग भी थी। आदम और हव्वा द्वारा उसके स्वरूपों के रूप में सेवा करने की माँग के अतिरिक्त, परमेश्वर ने भले और बुरे के ज्ञान के वृक्ष के द्वारा उनकी वफादारी की परीक्षा की। जैसी उसने उत्पत्ति 2:16 और 17 में आज्ञा दी :

> "तू वाटिका के सब वृक्षों का फल बेखटके खा सकता है; पर भले या बुरे के ज्ञान का जो वृक्ष है, उसका फल तू कभी न खाना।" (उत्पत्ति 2:16-17)

और निहितार्थ यह है, यदि आदम और हव्वा परीक्षा में सफल हो जाते, तो परमेश्वर की सेवा करने और उसके राज्य को फैलाने में उन्हें अत्यधिक आशीष मिलती।

अत:, परमेश्वर के साथ आदम की वाचा के संबंध में, वफादारी के साथ-साथ विश्वासघात के भी परिणाम शामिल थे। अब आदम और हव्वा के लिए जो सत्य था वह उनके वंशजों के लिए भी सत्य था। परमेश्वर के साथ जीवन में निरन्तर दिव्य उदारता, मानवीय वफादारी, और परिणाम शामिल रहे।

> "जिस दिन तू उसका फल खाएगा उसी दिन अवश्य मर जाएगा।" (उत्पत्ति 2:17)

और निहितार्थ यह है, यदि आदम और हव्वा परीक्षा में सफल हो जाते, तो परमेश्वर की सेवा करने और उसके राज्य को फैलाने में उन्हें अत्यधिक आशीष मिलती।

अत:, परमेश्वर के साथ आदम की वाचा के संबंध में, वफादारी के साथ-साथ विश्वासघात के भी परिणाम शामिल थे। अब आदम और हव्वा के लिए जो सत्य था वह उनके वंशजों के लिए भी सत्य था। परमेश्वर के साथ जीवन में निरन्तर दिव्य उदारता, मानवीय वफादारी, और परिणाम शामिल रहे।

नूह

आदम की वाचा के अतिरिक्त, परमेश्वर नूह और उसके वंशजों से वाचा के तीनों व्यवहारों के अर्थ में संबंधित रहा। पहला, परमेश्वर की उदारता ने नूह की वाचा के लिए मार्ग तैयार किया। जब परमेश्वर ने अपने धार्मिक न्याय के अनुसार मानव जाति को नष्ट करने का निर्णय लिया, तब उसने नूह और उसके परिवार को बचाने का निर्णय भी लिया। जैसा हम उत्पत्ति 6:8 में पढ़ते हैं :

> परन्तु यहोवा के अनुग्रह की दृष्टि नूह पर बनी रही। (उत्पत्ति 6:8)

परमेश्वर ने नूह और उसके परिवार के प्रति अत्यधिक दया दिखाई।

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट thirdmill.org पर जाएँ।

दूसरा, परमेश्वर ने नूह से वफादारी की माँग की। उसने उसे जहाज बनाने और प्राणियों को एकत्रित करने की आज्ञा दी। उत्पत्ति 6:18 और 19 में देखें कि नूह के साथ वाचा का बाँधा जाना कितनी घनिष्टता से नूह की जिम्मेदारियों से जुड़ा है। वहाँ हम पढ़ते हैं:

> "परन्तु तेरे संग मैं वाचा बाँधता हूँ; इसलिए तू... जहाज में प्रवेश करना। और सब जीवित प्राणियों में से तू एक एक जाति के दो दो, अर्थात् एक नर और एक मादा जहाज में ले जाकर, अपने साथ जीवित रखना।" (उत्पत्ति 6:18-19)

नूह की जिम्मेदारी थी कि वह अपने परिवार के साथ जहाज में प्रवेश करे और प्राणियों को लाकर उन्हें जीवित रखे। जल प्रलय के बाद भी, परमेश्वर ने परमेश्वर के स्वरूप के रूप में मनुष्य की भूमिका को पूर्ण करने की नूह की जिम्मेदारी पर बल दिया। अन्य बातों के साथ, उत्पत्ति 9:7 में उसने कहा:

> "और तुम फूलो-फलो, और बढ़ो, और पृथ्वी पर बहुतायत से सन्तान उत्पन्न करके उस में भर जाओ।" (उत्पत्ति 9:7)

प्रकृति में स्थिरता के वायदे पर नूह की वाचा के बल ने नूह और जिन का वह प्रतिनिधित्व करता था उनके लिए परमेश्वर के प्रति वफादार बने रहने की आवश्यकता को समाप्त नहीं किया।

तीसरा, नूह के समय में वफादारी और विश्वासघात के मानवीय कार्यों के परिणाम थे। नूह स्वयं परमेश्वर के प्रति विश्वासयोग्य था। अत:, जल प्रलय के पश्चात् परमेश्वर उसकी भेंट से प्रसन्न हुआ और उसे एक स्थिर संसार से आशीषित किया। जैसा हम उत्पत्ति 8:20 और 21 में पढ़ते हैं:

> तब नूह ने यहोवा के लिए एक वेदी बनाई; और सब शुद्ध पशुओं और सब शुद्ध पक्षियों में से कुछ कुछ लेकर वेदी पर होमबलि चढ़ाया। इस पर यहोवा ने सुखदायक सुगन्ध पाकर सोचा, "मनुष्य के कारण मैं फिर कभी भूमि को शाप न दूँगा, यद्यपि मनुष्य के मन में बचपन से जो कुछ उत्पन्न होता है वह बुरा ही होता है; तौभी जैसा मैं ने सब जीवों को अब मारा है, वैसा उनको फिर कभी न मारूँगा।" (उत्पत्ति 8:20-21)

परन्तु परमेश्वर ने यह भी स्पष्ट किया कि उसके विरूद्ध विद्रोह का घातक परिणाम शाप होगा। उदाहरण के लिए, उत्पत्ति 9:6 में परमेश्वर ने उस शाप के बारे में बताया जो हत्यारों पर पड़ेगा:

> "जो कोई मनुष्य का लहू बहाएगा उसका लहू मनुष्य ही से बहाया जाएगा।" (उत्पत्ति 9:6)

वाचा के जीवन के तीन पहलू नूह के वंशजों के समय में भी जारी रहे।

राष्ट्रीय वाचाएँ

अब जो सार्वभौमिक वाचाओ के बारे में सत्य था वह परमेश्वर द्वारा इस्राएल के साथ बाँधी गई राष्ट्रीय वाचाओं के लिए भी सत्य था। वायदे पर बल देने वाली अब्राहम की वाचा, व्यवस्था पर बल देने वाली मूसा की वाचा, और दाऊद के घराने के लिए स्थिर राजवंश पर बल देने वाली दाऊद की वाचा-ये सब सुजरेन-वासल सन्धियों के प्रारूप में अनुरूप ही थीं। दिव्य उदारता, मानवीय वफादारी और परिणाम के व्यवहार दिव्य वाचाओं के इन प्रत्येक चरणों में उपस्थित थे। एक बार फिर, हम इन में से प्रत्येक वाचा को उसके क्रमानुसार देखेंगे: पहली अब्राहम की वाचा; दूसरी मूसा की; और तीसरी दाऊद की।

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट thirdmill.org पर जाएँ।

अब्राहम

अब्राहम की वाचा ने इस्राएलियों के लिए सन्तान और भूमि के वायदों पर बल दिया, परन्तु उस समय वाचा के तीनों व्यवहार क्रियाशील थे। पहला, परमेश्वर ने अब्राहम के प्रति अत्यधिक उदारता दिखाई। उदाहरण के लिए, अब्राहम की आरम्भिक बुलाहट में, जो वाचा से कई वर्ष पूर्व थी, परमेश्वर ने अब्राहम के प्रति बड़ी दया दिखाई। उत्पत्ति 12:2 को देखें जहाँ परमेश्वर ने कहा:

> "मैं तुझ से एक बड़ी जाति बनाऊँगा, और तुझे आशीष दूँगा, और तेरा नाम महान करूँगा, और तू आशीष का मूल होगा।" (उत्पत्ति 12:2)

अब्राहम के जीवन भर परमेश्वर ने उसके प्रति दया दिखाई, उसके पाप को क्षमा किया, उसे धर्मी ठहराया, और उसे समस्याओं से छुड़ाया।

दूसरा, परमेश्वर ने अब्राहम से वफादारी की भी माँग की। उदाहरण के लिए, परमेश्वर की आरम्भिक बुलाहट में भी, अब्राहम से आज्ञा मानने की माँग की गई थी। जैसा हम उत्पत्ति 12:1 में पढ़ते हैं परमेश्वर ने उसे आज्ञा दी:

> "अपने देश, और अपने कुटुम्बियों, और अपने पिता के घर को छोड़कर उस देश में चला जा जो मैं तुझे दिखाऊँगा।" (उत्पत्ति 12:1)

परमेश्वर ने अब्राहम से कहा कि वह अपने देश और पिता के घर को छोड़कर एक ऐसे देश में जाए जिसे उसने कभी नहीं देखा था। और देखें उत्पत्ति 17:1 और 2 में अपनी वाचा की पुष्टि करते समय किस प्रकार परमेश्वर ने अब्राहम को वफादारी का स्मरण कराया:

> "मैं सर्वशक्तिमान ईश्वर हूँ; मेरी उपस्थिति में चल और सिद्ध होता जा। मैं तेरे साथ वाचा बाँधूँगा, और तेरे वंश को अत्यन्त ही बढ़ाऊँगा।" (उत्पत्ति 17:1-2)

यद्यपि बहुत से मसीही इसे देखने में असफल हो जाते हैं, लेकिन अब्राहम का परमेश्वर के साथ वाचा का संबंध पूर्णत: प्रतिज्ञात्मक नहीं था। पुराने नियम की सारी वाचाओं के समान ही, परमेश्वर ने अब्राहम से वफादार आज्ञापालन की माँग की।

तीसरा, परमेश्वर ने यह भी स्पष्ट किया कि अब्राहम की वफादारी और विश्वासघात के लिए परिणाम भी थे। उत्पत्ति 17:1 और 2 में पुन: अब्राहम से विश्वासयोग्य बने रहने की परमेश्वर की माँग को देखें, विशेषत: पद 2 में आशीष के परिणामों पर ध्यान दें:

> "मैं सर्वशक्तिमान ईश्वर हूँ; मेरी उपस्थिति में चल और सिद्ध होता जा।" (उत्पत्ति 17:1)

और फिर पद 2 में:

> "मैं तेरे साथ वाचा बाँधूँगा, और तेरे वंश को अत्यन्त ही बढ़ाऊँगा।" (उत्पत्ति 17:2)

परमेश्वर ने स्पष्ट रूप से बताया कि अब्राहम के वंशजों की संख्या में वृद्धि वफादारी का परिणाम होगी। और उसी के अनुरूप, परमेश्वर ने यह भी कहा कि विश्वासघात के परिणाम घातक शाप होंगे। देखें उसने उत्पत्ति 17:10-14 में अब्राहम से क्या कहा:

> "मेरे साथ बाँधी हुई वाचा, जिसका पालन तुझे और तेरे पश्चात् तेरे वंश को करना पड़ेगा, वह यह है: तुम में से एक एक पुरूष का खतना हो... जो पुरूष खतनारहित

> रहे, अर्थात् जिसकी खलड़ी का खतना न हो, वह प्राणी अपने लोगों में से नष्ट किया जाए, क्योंकि उसने मेरे साथ बाँधी हुई वाचा को तोड़ दिया।” (उत्पत्ति 17:10-14)

परमेश्वर ने वाचा के प्रति वफादार समर्पण के चिन्ह के रूप में खतने की माँग की, ताकि इस्राएली पुरूषों में जिस का खतना न हुआ हो वह अपने लोगों में से नाश किए जाने का शाप सहे, वाचा के जीवन की आशीषों से दूर हो जाए। अब्राहम से घनिष्टता से जुड़े ये वाचा के तीन व्यवहार अब्राहम से लेकर मूसा की अगली वाचा तक निरन्तर परमेश्वर के लोगों के जीवन को नियंत्रित करते हैं।

मूसा

अब इस्राएल जाति के साथ बाँधी गई दूसरी वाचा मूसा की वाचा थी। जैसा हम देख चुके हैं, इस वाचा ने परमेश्वर की व्यवस्था पर बल दिया क्योंकि यह उस समय बाँधी गई थी जब परमेश्वर इस्राएल के गोत्रों को एक एकीकृत राष्ट्र में बदल रहा था। परन्तु यह सोचना एक भयानक गलती होगी कि मूसा की वाचा के अन्तर्गत वाचा के अन्य व्यवहार जीवन से अनुपस्थित थे। मूसा की वाचा में वाचा के सारे व्यवहारों की उपस्थिति को समझाने के लिए, आइए हम संक्षेप में उसकी वाचा के मुख्य भाग, दस आज्ञाओं को देखते हैं।

दस आज्ञाओं में प्रस्तावना में दिव्य उदारता स्पष्ट है जो परमेश्वर की व्यवस्था से पहले आती है। आपको याद होगा कि निर्गमन 20:2 में दस आज्ञाओं का आरम्भ इस प्रकार होता है :

> “मैं तेरा परमेश्वर यहोवा हूँ, जो तुझे दासत्व के घर अर्थात् मिस्र देश से निकाल लाया है।” (निर्गमन 20:2)

मूसा की वाचा कार्यों की वाचा नहीं थी; वह करूणा और अनुग्रह की वाचा थी। फिर भी, दस आज्ञाएँ इसे बिल्कुल स्पष्ट कर देती हैं कि परमेश्वर ने अपने लोगों से वफादारी की माँग की। जैसा निर्गमन 20:3 में पहली आज्ञा बताती है :

> “तू मुझे छोड़ दूसरों को ईश्वर करके न मानना।” (निर्गमन 20:3)

दिव्य अनुग्रह मानवीय वफादारी के विरूद्ध नहीं था; बल्कि इसमें सहायक और विश्वासयोग्यता की ओर ले जाता था। इससे बढ़कर, निर्गमन 20:4-6 में दस आज्ञाएँ वफादारी और विश्वासघात के परिणामों के बारे में बताती हैं :

> “तू अपने लिए कोई मूर्ति खोदकर न बनाना... तू उनको दण्डवत् न करना, और न उनकी उपासना करना; क्योंकि मैं तेरा परमेश्वर यहोवा जलन रखने वाला परमेश्वर हूँ, और जो मुझ से बैर रखते हैं, उनके बेटों, पोतों, और परपोतों को भी पितरों का दण्ड दिया करता हूँ, और जो मुझ से प्रेम रखते और मेरी आज्ञाओं को मानते हैं, उन हजारों पर करूणा किया करता हूँ।” (निर्गमन 20:4-6)

ये व्यवहार जो दस आज्ञाओं में प्रकट होते हैं वे मूसा के दिनों से लेकर दाऊद के साथ अगली वाचा के सारे जीवनों तक विस्तृत हैं।

दाऊद

पुराने नियम के इस्राएल के साथ बाँधी अन्तिम वाचा, अर्थात् दाऊद की वाचा, ने बल दिया कि परमेश्वर दाऊद के वंश को इस्राएल पर राज्य करने के लिए स्थाई राजवंश के रूप में स्थापित कर रहा था।

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट thirdmill.org पर जाएँ।

फिर भी, जब हम वृहद् तस्वीर को देखते हैं, तो यह भी स्पष्ट हो जाता है कि इस्राएल को साम्राज्य का उपहार दिव्य उदारता, मानवीय वफादारी और परिणामों के सन्दर्भ में मिला।

देखें भजन 89:3-4 दाऊद के साथ परमेश्वर की वाचा पर किस प्रकार टिप्पणी करते हैं:

> तू ने कहा, "मैं ने अपने चुने हुए से वाचा बाँधी है, मैं ने अपने दास दाऊद से शपथ खाई है, "मैं तेरे वंश को सदा स्थिर रखूँगा; और तेरी राजगद्दी को पीढ़ी से पीढ़ी तक बनाए रखूँगा।'" (भजन 89:3-4)

ये पद परमेश्वर द्वारा दाऊद को दिखाई गई उदारता को प्रतिबिम्बित करते हैं। उसने दाऊद को चुना और उसे तथा उसके वंश को इस्राएल के ऊपर सदा के लिए राजवंश नियुक्त किया। परन्तु परमेश्वर ने वफादारी की भी माँग की, और विश्वासघात के लिए परिणामों की धमकी दी। भजन 89:30-32 को देखें:

> "यदि उसके वंश के लोग मेरी व्यवस्था को छोड़ें, और मेरे नियमों के अनुसार न चलें... तो मैं उनके अपराध का दण्ड सोंटे से, और उनके अधर्म का दण्ड कोड़ों से दूँगा।" (भजन 89:30-32)

यदि दाऊद के पुत्र परमेश्वर की व्यवस्था को त्याग दें, तो उन्हें कठोर दण्ड मिलेगा। दूसरी तरफ, यदि दाऊद के वंशज परमेश्वर के प्रति विश्वासयोग्य रहें तो उन पर बड़ी आशीषें आएँगी। जब हम दाऊद के समय से लेकर पुराने नियम के अन्त के समय तक के इस्राएल के इतिहास को पढ़ते हैं, तो यह स्पष्ट है कि ये वाचा के व्यवहार निरन्तर वाचा के जीवन को प्रदर्षित करते रहे। ये तीनों वाचा के व्यवहार पुराने नियम इस्राएल की प्रत्येक वाचा की अवधि में आते हैं।

सार्वभौमिक और राष्ट्रीय वाचाओं में वाचा के व्यवहारों को ध्यान में रखते हुए, अब हम नई वाचा, पूर्णता की वाचा को देखने के लिए तैयार हैं।

नई वाचा

पुराने नियम में वाचाओं के द्वारा संचालित परमेश्वर के राज्य की नियति नई वाचा को स्थापित करने में मसीह के कार्य के द्वारा अपने चरम पर पहुँच गई। यहाँ भी, अन्य सारी दिव्य वाचाओं के समान, बाइबल-आधारित वाचाओं के मूलभूत व्यवहार मसीह में नई वाचा में स्पष्ट हैं। सबसे पहले, नई वाचा में दिव्य उदारता शामिल है। परमेश्वर ने नई वाचा को स्थापित करते समय अपने निर्वासित लोगों पर बड़ी दया दिखाने का वायदा किया। जैसा यिर्मयाह 31:34 में हम पढ़ते हैं :

> "क्योंकि मैं उनका अधर्म क्षमा करूँगा, और उनका पाप फिर स्मरण न करूँगा।" (यिर्मयाह 31:34)

इसी प्रकार और भी कई रीतियों में, नई वाचा स्पष्टत: परमेश्वर की कोमल करूणा को प्रदर्षित करती है।

साथ ही, मानवीय वफादारी भी नई वाचा में एक तत्व है। परमेश्वर अपनी व्यवस्थाओं को समाप्त करने का वायदा नहीं करता है, और वह किसी को उन्हें मानने से छूट नहीं देता है। इसके विपरीत, वह वफादारी की माँग करता है। परन्तु परमेश्वर यिर्मयाह 31:33 में भी वायदा करता है:

> "मैं अपनी व्यवस्था उनके मन में समवाऊँगा, और उसे उनके हृदय पर लिखूँगा।" (यिर्मयाह 31:33)

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट thirdmill.org पर जाएँ।

यह पद सिखाता है कि परमेश्वर अपने लोगों को अपनी व्यवस्था के प्रति प्रेम देगा ताकि वे पूरे मन से उसकी आज्ञा मानें।

और अन्ततः, वफादारी के परिणाम भी स्पष्ट हैं। जैसा यिर्मयाह 31:33 आगे कहता है:

> "मैं उनका परमेश्वर ठहरूँगा, और वे मेरी प्रजा ठहरेंगे।" (यिर्मयाह 31:33)

यह सूत्र आश्वासन देता है कि परमेश्वर अपने लोगों को आशीष देगा क्योंकि वे इस वाचा की जिम्मेदारियों को पूरा करेंगे।

अब, हमें सदैव यह याद रखना चाहिए कि मसीह में परमेश्वर के राज्य के अन्तिम चरण के प्रारूप का पालन करते हुए, नई वाचा तीन चरणों में अस्तित्व में आती है। नई वाचा का शुभारम्भ मसीह के प्रथम आगमन और उसके प्रेरितों के कार्य में हुआ; कलीसिया में कार्यरत मसीह की सामर्थ के द्वारा कलीसियाई इतिहास के दौरान नई वाचा विविध रीतियों में फलवन्त होती है; और इस युग के अन्त में मसीह के महिमामय आगमन के समय नई वाचा पूर्ण होगी।

पहले, नई वाचा का शुभारम्भ इसलिए हुआ क्योंकि मसीह ने अपनी पृथ्वी की सेवकाई को पूर्ण किया। मसीह सारी वाचा की माँगों के प्रति विश्वासयोग्य था। अपने जन्म से उसने कभी अपने स्वर्गीय पिता की आज्ञा का उल्लंघन नहीं किया था। और इससे बढ़कर, अपने लोगों के पापों के लिए बलिदान के रूप में मसीह के क्रूस पर मरने के कारण, उसकी धार्मिकता उन सब को दी गई है जो उस पर विश्वास करते हैं। मसीह का एक बलिदान इतना सिद्ध था कि उसे दोहराने की आवश्यकता नहीं है। जैसे इब्रानियों का लेखक इसे इब्रानियों 10:12-14 में बताता है :

> परन्तु (मसीह) पापों के बदले एक ही बलिदान सर्वदा के लिए चढ़ाकर परमेश्वर के दाहिने जा बैठा... क्योंकि उसने एक ही चढ़ावे के द्वारा उन्हें जो पवित्र किए जाते हैं, सर्वदा के लिए सिद्ध कर दिया है। (इब्रानियों 10:12-14)

और इस बलिदान के कारण, नई वाचा का शुभारम्भ हुआ। जैसा इब्रानियों के लेखक ने इब्रानियों 9:12-15 में लिखा:

> (मसीह) ने अपने ही लहू के द्वारा, एक ही बार पवित्र स्थान में प्रवेश किया और अनन्त छुटकारा प्राप्त किया... इसी कारण मसीह नई वाचा का मध्यस्थ है। (इब्रानियों 9:12-15)

परमेश्वर की व्यवस्था की हर बात को पूरा करने और अपने आप को पाप के लिए सिद्ध और पूर्ण बलिदान के रूप में प्रस्तुत करने के लिए अपने पुत्र को भेजने के द्वारा परमेश्वर ने नई वाचा को स्थापित करने के लिए इतिहास में हस्तक्षेप किया। उसका बलिदान उन सब को अनन्त क्षमा प्रदान करता है जो उस पर विश्वास करते हैं। अब पहले आगमन में मसीह के उद्धार के कार्य के महत्व के बावजूद, नई वाचा का महान उद्धार नई वाचा के मध्यस्थ के रूप में मसीह के सतत् कार्य पर भी निर्भर है। हर दिन मसीह स्वर्ग में अपने पिता के सिंहासन के सम्मुख अपने लोगों के लिए बिचवई करता है। इब्रानियों के लेखक ने पुन: इस यथार्थ का संकेत दिया है। इब्रानियों 7:24-25 में उसने लिखा:

> यीशु युगानुयुग रहता है, इस कारण उसका याजक पद अटल है। इसीलिए जो उसके द्वारा परमेश्वर के पास आते हैं, वह उनका पूरा पूरा उद्धार कर सकता है, क्योंकि वह उनके लिए विनती करने को सर्वदा जीवित है। (इब्रानियों 7:24-25)

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट thirdmill.org पर जाएँ।

वह राज्य करता है और हमारे लिए विनती करता है इसलिए हम निश्चित हो सकते हैं कि मसीह अपने पर विश्वास करने वाले सब लोगों को उन सारी परीक्षाओं और समस्याओं से निकालेगा जिनका हम अब सामना करते हैं।

और अन्त में, मसीह ने हमारे पापों की कीमत चुका दी है और निरन्तर हमारे लिए विनती करता है, इस कारण हम निश्चित हो सकते हैं कि एक दिन वह लौटेगा और नई वाचा के वायदों को पूरा करेगा। जैसा इब्रानियों का लेखक इब्रानियों 9:28 में बताता है :

> मसीह भी बहुतों के पापों को उठा लेने के लिये एक बार बलिदान हुआ; और जो लोग उसकी बाट जोहते हैं उनके उद्धार के लिये दूसरी बार बिना पाप उठाए हुए दिखाई देगा। (इब्रानियों 9:28)

उस दिन, मसीह पर विश्वास रखने वाला प्रत्येक व्यक्ति पूर्ण पवित्रता और नये आकाश और नई पृथ्वी पर परमेश्वर के अनन्त राज्य में अनन्त जीवन का उपहार प्राप्त करेगा। अत: हम देखते हैं कि कि बाइबल में वाचाओं के बारे में पढ़ते समय हम वाचा की प्रत्येक अवधि के विशिष्ट बल को याद रखने में बुद्धिमान हैं, परन्तु हमें यह भी ध्यान रखना चाहिए कि परमेश्वर के साथ जीवन में इन विशिष्ट बलों से बढ़कर बहुत कुछ था। परमेश्वर के साथ वाचा के जीवन के प्रत्येक चरण में वाचा के व्यवहारों की पूर्ण श्रृंखला शामिल थी।

अब जबकि हम यह देख चुके हैं कि कैसे परमेश्वर के साथ वाचा के जीवन में सर्वदा दिव्य उदारता, मानवीय वफादारी, और परिणामों के तीन-स्तरीय व्यवहार शामिल हैं, तो हमें अपने अन्तिम शीर्षक पर आना चाहिए: वाचा के लोग।

वाचाओं के लोग

परमेश्वर की वाचाओं के लोग कौन थे? दिव्य वाचाओं में कौन शामिल था और कौन नहीं? ये विभिन्न लोग परमेश्वर की वाचाओं के व्यवहारों से किस प्रकार संबंधित थे? इन प्रश्नों का उत्तर देने के लिए हम दो विषयों को देखेंगे: पहला, हम मानवता की श्रेणियों को देखेंगे; दूसरा, हम मानवता की इन विभिन्न श्रेणियों में वाचा के व्यवहारों के प्रयोग को देखेंगे। आइए पहले हम देखते हैं कि परमेश्वर की वाचाओं के संबंध में मानव जाति किस प्रकार विभाजित है।

मानवता की श्रेणियाँ

दुर्भाग्यवश, हम एक ऐसे समय में रहते हैं जब वाचाओं के लोगों के बारे में अत्यधिक असमंजस है। अधिकाँशत:, सुसमाचारीय मसीही सोचते हैं कि संसार में दो प्रकार के लोग हैं: विश्वासी और अविश्वासी, उद्धार पाए हुए और उद्धार न पाए हुए। अब इन श्रेणियों में कुछ भी गलत नहीं है; बाइबल बहुत बार इस तरह से बात करती है। परन्तु समस्याएँ इसलिए उत्पन्न होती हैं क्योंकि बहुत से सुसमाचारीय मसीही विश्वासियों को उन लोगों के बराबर ठहराते हैं जो परमेश्वर के साथ वाचा में हैं, और अविश्वासियों को उनके साथ जो परमेश्वर की वाचा के बाहर हैं। इस विचार में, केवल दो प्रकार के लोग हैं: हर व्यक्ति जिसने उद्धार पाया है और परमेश्वर के साथ वाचा में है, और वह प्रत्येक व्यक्ति जिसने उद्धार नहीं पाया है और जो वाचा के बाहर है।

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट thirdmill.org पर जाएँ।

परन्तु जब हम दिव्य वाचाओं के लोगों को सावधानी से देखते हैं, जल्द ही यह स्पष्ट हो जाता है कि यह द्वि-स्तरीय वर्गीकरण मानव जाति का पर्याप्त वर्णन नहीं करता है। मानवता के वर्गीकरण के ज्यादा उपयुक्त विचार के लिए, हम दो मुद्दों को देखेंगे। पहला दिव्य वाचाओं के अन्तर्गत लोगों का वर्गीकरण और दूसरा, उन लोगों के बीच विभाजन जो दिव्य वाचाओं में शामिल हैं और जो नहीं हैं।

वाचाओं के अन्तर्गत

सबसे पहले, यह देखना महत्वपूर्ण है कि बाइबल में प्रत्येक वाचा में लोगों का एक महत्वपूर्ण विभाजन प्रकट होता है। पुराने नियम की प्रत्येक वाचा में विश्वासी और अविश्वासी दोनों शामिल थे। आदम और नूह की वाचा में इसे देखना कठिन नहीं है। उन्हें इसी कारण सार्वभौमिक वाचाएँ कहा जाता है क्योंकि सब लोग, विश्वासी या अविश्वासी इन वाचाओं के द्वारा परमेश्वर से बँधे हैं। आदम की वाचा में स्थापित किए गए मूलभूत सिद्धान्त विश्वास करने वालों और न करने वालों दोनों पर लागू होते हैं। नूह की वाचा में प्रकृति की स्थिरता का वायदा विश्वासियों और अविश्वासियों दोनों पर लागू होता है। अत: प्राचीन इतिहास के दौरान, संसार में दो प्रकार के लोग थे: सच्चे विश्वासी जो परमेश्वर के साथ वाचा में थे और ऐसे अविश्वासी भी जो परमेश्वर के साथ वाचा में थे।

अब, अब्राहम, मूसा और दाऊद की राष्ट्रीय वाचाओं की भी यही परिस्थिति थी। इन में से प्रत्येक वाचा में भी विश्वासी और अविश्वासी दोनों शामिल थे। जैसा कि पुराना नियम स्पष्ट करता है, सदियों के दौरान अधिकाँश इस्राएली अविश्वासी साबित हुए, यद्यपि वे परमेश्वर के साथ वाचा में थे। परमेश्वर की वाचा के लोगों के रूप में सम्पूर्ण देश में, केवल कुछ लोगों ने वास्तव में विश्वास किया और अपने पापों से अनन्त उद्धार पाया। अत:, राष्ट्रीय इस्राएल की वाचाओं में विश्वासी और अविश्वासी दोनों शामिल थे। इस प्रकार, इस्राएल की राष्ट्रीय वाचाओं के लोग बहुत कुछ आदम और नूह की सार्वभौमिक वाचाओं के लोगों के समान ही थे।

अब जब नई वाचा के संबंध में हम वाचा के लोगों को देखते हैं, तो एक और जटिलता उत्पन्न होती है। नई वाचा का वायदा था कि किसी बिन्दू पर, उसके अन्तर्गत हर व्यक्ति सच्चा विश्वासी होगा। देखें यिर्मयाह किस प्रकार यिर्मयाह 31:34 में इस तथ्य पर बल देता है :

> “तब उन्हें फिर एक दूसरे से यह न कहना पड़ेगा कि यहोवा को जानो, क्योंकि यहोवा की यह वाणी है, छोटे से लेकर बड़े तक, सब के सब मेरा ज्ञान रखेंगे; क्योंकि मैं उनका अधर्म क्षमा करूँगा, और उनका पाप फिर स्मरण न करूँगा।”
> **(यिर्मयाह 31:34)**

नई वाचा की आशा थी कि परमेश्वर के लोग पूरी तरह पाप से छुटकारा पाएँगे, बिना किसी अपवाद के प्रत्येक व्यक्ति यहोवा को जानेगा।

यह नई वाचा की नियति है, परन्तु हमें एक बार फिर याद रखना चाहिए कि नई वाचा में परमेश्वर का राज्य तीन चरणों में पूर्ण होता है। इसका शुभारम्भ मसीह के प्रथम आगमन में हुआ; यह आज कलीसिया में जारी है; और यह मसीह के महिमामय आगमन में पूर्ण होगा। अन्य शब्दों में, जब मसीह पहले पृथ्वी पर आया तो नई वाचा की आशाएँ अचानक या पूर्ण रूप से नहीं आईं थी।

परिणामस्वरूप, पूर्ण उद्धार देने के लिए मसीह के लौटने तक, नई वाचा में विश्वासी और अविश्वासी दोनों हैं। एक तरफ, नई वाचा में वे पुरूष और स्त्रियाँ शामिल हैं जिन्होंने उद्धार के लिए मसीह पर विश्वास किया। चाहे यहूदी हों या अन्यजाति, वे मसीह के लहू द्वारा खरीदे हुए और विश्वास के द्वारा अनन्तकाल के लिए धर्मी ठहराए गए सच्चे विश्वासी हैं। दूसरी तरफ, नई वाचा के लोगों में वे यहूदी और अन्यजाति भी शामिल हैं जो सच्चे विश्वासी नहीं हैं, परन्तु जिन्होंने विश्वास न करने के बावजूद कुछ हद तक नई वाचा की आशीषों को अनुभव किया है।

देखें प्रेरित यूहन्ना ने 1 यूहन्ना 2:19 में कलीसिया में अविश्वासियों के बारे में क्या कहा :

> वे निकले तो हम ही में से, पर हम में के थे नहीं; क्योंकि यदि हम में के होते, तो हमारे साथ रहते; पर निकल इसलिए गए कि यह प्रकट हो कि वे सब हम में के नहीं हैं। (1 यूहन्ना 2:19)

यहाँ पर प्रेरित ने उन लोगों के बारे में लिखा जो मसीही विश्वास को छोड़ देते हैं। उसने कहा एक अर्थ में वे "हम में के थे," यानि, वे मसीही कलीसिया का भाग थे। परन्तु वह यह भी कहता है कि मसीही विश्वास को छोड़ने के द्वारा, उन्होंने स्पष्ट कर दिया कि वे "वास्तव में हम में के नहीं थे," यानि, वे सच्चे विश्वासी नहीं थे। और वह इसे कैसे जानता है? जब वह कहता है, यदि वे हम में के होते, तो वे हमारे साथ रहते। यानि, वे अन्त तक विश्वासयोग्य रहते।

हम सब जानते हैं कि कलीसियाओं की सूची में उन लोगों के नाम शामिल होते हैं जिन्होंने अपने पापों से उद्धार पा लिया है और जिन्होंने नहीं पाया है। कोई भी यह दावा नहीं करता कि नई वाचा के लोगों में गिने जाने वाले हर व्यक्ति ने वास्तव में उद्धार पाया है। यद्यपि हम उनके बीच में अन्तर नहीं कर सकते हैं, लेकिन नया नियम स्पष्ट रूप से सिखाता है कि मसीह के लौटने तक, कलीसिया, नई वाचा के समुदाय में, सच्चे विश्वासी और अविश्वासी दोनों रहेंगे।

शामिल और वंचित

दूसरा, हमारे लिए उन लोगों के बीच विभाजन को पहचानना भी आवश्यक है जो कुछ वाचाओं में शामिल हैं तथा जो उनसे वंचित हैं। अब हम समझ गए हैं कि आदम और नूह की सार्वभौमिक वाचाओं में हर व्यक्ति शामिल है। कोई भी व्यक्ति इन वाचाओं में स्थापित आधारों और प्राकृतिक स्थिरता से वंचित नहीं है। परन्तु जब परमेश्वर ने इस्राएल को अपने विशेष लोगों के रूप में चुना तो मानवता की अवस्था बदल गई।

परमेश्वर के वाचा के लोगों के रूप में इस्राएल जाति के चुनाव के साथ, एक जटिलता उत्पन्न हुई। अब हम पहले ही देख चुके हैं कि अब्राहम, मूसा, और दाऊद की वाचाओं में विश्वासी और अविश्वासी दोनों शामिल हैं। परन्तु ये वाचाएँ लोगों के एक चुनिंदा समूह, इस्राएलियों और इस्राएल में गोद लिए गए कुछ अन्यजाति के लोगों से बाँधी गई थी। इसका अर्थ है, कि अधिकाँशत:, अन्यजातियाँ इन वाचाओं से वंचित थीं। निश्चित रूप से, सारे लोग, अन्यजातियों सहित, सार्वभौमिक वाचाओं के लोग हैं, परन्तु अन्यजाति के लोग इस्राएल के साथ बाँधी गई विशेष राष्ट्रीय वाचाओं के लोग नहीं थे। देखें कि पौलुस ने इफिसुस के अन्यजातियों का उनके विश्वासी बनने से पूर्व किस प्रकार वर्णन किया। इफिसियों 2:12 में उसने लिखा :

> तुम लोग उस समय मसीह से अलग, और इस्राएल की प्रजा के पद से अलग किए हुए, और प्रतिज्ञा की वाचाओं के भागी न थे, और आशाहीन और जगत में ईश्वररहित थे। (इफिसियों 2:12)

इस्राएल के साथ की राष्ट्रीय वाचाओं से बाहर के लोग ईश्वररहित और आशाहीन थे। अत:, राष्ट्रीय वाचाओं के समय तक, संसार में वास्तव में तीन प्रकार के लोग थे: वे लोग जो सच्चे विश्वासियों के रूप में परमेश्वर के साथ इस्राएल की वाचाओं में थे, वे लोग जो अविश्वासियों के रूप में परमेश्वर के साथ इस्राएल की वाचाओं में थे, और वे लोग जो इस्राएल की वाचा के बाहर थे।

यही तीन-स्तरीय अवस्था नई वाचा की भी है। जैसा हम देख चुके हैं, मसीह के महिमामय आगमन तक नई वाचा में विश्वासी और अविश्वासी दोनों शामिल हैं। परन्तु नई वाचा में इन दो प्रकार के लोगों के अतिरिक्त, हमें तीसरी श्रेणी को जोड़ना चाहिए: वे पुरूष और स्त्रियाँ जो सुसमाचार का तिरस्कार करते हैं,

जो मसीही होने का दावा नहीं करते हैं, जो कलीसिया का भाग नहीं हैं। वे नई वाचा से वंचित हैं। इस्राएल के राष्ट्र की पुराने नियम की अवधि में प्राथमिक रूप से अन्यजाति लोग वाचा के बाहर थे, परन्तु अब जबकि मसीह आ चुका है, अब वाचा से बाहर के लोगों में वे यहूदी और अन्यजाति दोनों शामिल हैं जिनका मसीह या उसकी कलीसिया में कोई भाग नहीं है।

अत: हम देखते हैं कि पवित्र वचन दिव्य वाचाओं के संबंध में मानव जाति को विभिन्न रीतियों में बाँटता है। सार्वभौमिक वाचाओं में सारे लोग शामिल हैं, विश्वासी और अविश्वासी दोनों। राष्ट्रीय वाचाओं ने बहुसंख्यक अन्यजातियों को वंचित रखा, परन्तु इस्राएल के अन्दर विश्वासियों और अविश्वासियों दोनों को शामिल किया। और मसीह के लौटकर कलीसिया को शुद्ध करने तक नई वाचा में वे यहूदी और अन्यजाति शामिल नहीं हैं जिनका मसीही विश्वास में कोई भाग नहीं है, परन्तु इसमें यहूदी और अन्यजाति दोनों लोग शामिल हैं जो विश्वासी और अविश्वासी हैं।

अब यह देखने के बाद कि परमेश्वर की वाचाओं के संबंध में किस प्रकार सम्पूर्ण मानव जाति विविध समूहों में विभाजित है, हम दूसरे मुद्दे पर जाने के लिए तैयार हैं। वाचाओं के व्यवहार-दिव्य उदारता, मानवीय वफ़ादारी और वफादारी तथा विश्वासघात के परिणाम-इन विविध समूहों पर किस प्रकार लागू होते हैं?

पहलुओं का प्रयोग

जब हम पुराने नियम के मौलिक अर्थ को समझने और उसे अपने समय में लागू करने के लिए पढ़ते हैं, तो यह याद रखना महत्वपूर्ण है कि पुराने नियम को पहले पढ़ने वाले पुराने नियम के इस्राएली और हम मसीही जो अब इसे पढ़ते हैं दोनों मानव जाति के उसी तीन-स्तरीय विभाजन का सामना करते हैं: वे जो वाचा के बाहर हैं, वाचा में अविश्वासी, और वाचा में विश्वासी।

इसका अर्थ है कि यदि हम यह समझना चाहते हैं कि ये वाचा के व्यवहार पुराने नियम के समय में रहने वाले लोगों पर कैसे लागू होते थे और फिर मौलिक अर्थ के उन आयामों को अपने समय से संबंधित करना चाहते हैं, तो हमें सर्वदा इन तीन प्रकार के लोगों के अर्थ में सोचना होगा। पहला, हमें इस्राएल के साथ राष्ट्रीय वाचाओं से वंचित लोगों और नई वाचा से वंचित लोगों पर विचार करना होगा; दूसरा, हमें इस्राएल की राष्ट्रीय वाचाओं में शामिल अविश्वासियों और नई वाचा में शामिल अविश्वासियों पर विचार करना होगा; तीसरा, हमें इस्राएल की राष्ट्रीय वाचाओं में शामिल सच्चे विश्वासियों और नई वाचा में शामिल सच्चे विश्वासियों पर विचार करना होगा।

आइए पहले हम देखते हैं कि वाचा के व्यवहार उन अविश्वासियों पर कैसे लागू होते हैं जिन्हें इस्राएल की वाचाओं और नई वाचा में शामिल नहीं किया गया था।

वंचित अविश्वासी

यद्यपि ये अविश्वासी वास्तव में खोए हुए लोगों के रूप में जीते हैं लेकिन वे आदम और नूह की सार्वभौमिक वाचाओं में सहभागी हैं; उनका जीवन वाचाओं के इन तीनों व्यवहारों से प्रभावित होता है। सबसे पहले, सारे लोगों के प्रति दिखाई जाने वाली करूणा के द्वारा सारे अविश्वासी परमेश्वर की दया का अनुभव करते हैं। जैसा यीशु ने मत्ती 5:45 में बताया :

> "तुम्हारा स्वर्गीय पिता भले और बुरे दोनों पर अपना सूर्य उदय करता है, और धर्मी और अधर्मी दोनों पर मेंह बरसाता है।" (मत्ती 5:45)

हम इन आशीषों को अक्सर "सामान्य अनुग्रह" कहते हैं क्योंकि ये उद्धार देने वाली करूणा नहीं, परन्तु सारे मनुष्यों पर किया जाने वाले अनुग्रह है।

दूसरा, राष्ट्रीय वाचाओं और नई वाचा के बाहर के अविश्वासियों की भी जिम्मेदारी है कि वे अपने सृष्टिकर्ता के प्रति वफादार बनें। विशिष्ट वाचाओं के बाहर के बहुत से अविश्वासियों को इस्राएल और कलीसिया को दिए गए विशेष प्रकाशन का कम से कम कुछ ज्ञान है, और यह ज्ञान उन्हें वफादार बनने की जिम्मेदारी देता है। परन्तु इससे बढ़कर, पुराने नियम या नये नियम का कोई विशिष्ट ज्ञान न रखने वाले लोगों को भी परमेश्वर की सेवा करने अपनी जिम्मेदारियों की आधारभूत समझ है जो सामान्य या प्राकृतिक प्रकाशन से आती है। जैसा पौलुस रोमियों 1:20 में बताता है :

> उसके अनदेखे गुण, अर्थात् उसकी सनातन सामर्थ और परमेश्वरत्व, जगत की सृष्टि के समय से उसके कामों के द्वारा देखने में आते हैं, यहाँ तक कि वे निरूत्तर हैं। (रोमियों 1:20)

अत:, इस्राएल की वाचाओं और नई वाचा के बाहर के अविश्वासियों की भी मूलभूत जिम्मेदारी है कि वे अपने सृष्टिकर्ता की आराधना और सेवा करें।

तीसरा, राष्ट्रीय वाचाओं और नई वाचा के बाहर के अविश्वासी अपने कार्यों का फल भोगते हैं। कई बार, जब अविश्वासी सत्य के अनुसार जीते हैं तो परमेश्वर उन्हें अल्पकालिक आशीषें देता है। ऐसे अविश्वासियों के बीच भी बुद्धिमान जीवन के लाभ हैं। और अन्य समयों पर परमेश्वर उनके विद्रोह का जवाब अल्पकालिक शापों से देता है। वाचा के बाहर के लोगों के लिए ऐसे मिश्रित अनुभवों के बावजूद, मसीह के लौटने पर, ये अविश्वासी परमेश्वर से कोई आशीष नहीं पायेंगे। वे केवल उसके अनन्त दण्ड को सहेंगे। इन रीतियों में, इस्राएल की राष्ट्रीय वाचाओं के बाहर अविश्वासी और नई वाचा से वंचित अविश्वासी आज सार्वभौमिक वाचाओं के व्यवहारों को अनुभव करते हैं।

शामिल अविश्वासी

अब मानव जाति की दूसरी श्रेणी वे अविश्वासी हैं जो इस्राएल के राष्ट्र की वाचाओं और नई वाचा में हैं। दिव्य वाचाओं के व्यवहार उन पर कैसे लागू होते हैं? सबसे पहले, परमेश्वर ने इन लोगों पर उन लोगों से अधिक दया और करूणा दिखाई है जो इन वाचाओं के बाहर हैं। सत्य है, उन्हें उद्धार देने वाला अनुग्रह नहीं दिखाया जाता है क्योंकि वे सच्चे विश्वासी नहीं हैं। फिर भी, पुराने नियम में इस्राएल का भाग होने के बड़े फायदे थे, जैसे कि अब नये नियम की कलीसिया का भाग होने के बड़े फायदे हैं। प्रेरित पौलुस ने परमेश्वर की विशिष्ट वाचाओं में भाग लेने के फायदों को प्रतिबिम्बित किया जब उसने विश्वास न करने वाले इस्राएलियों को मिलने वाले फायदों का वर्णन किया। रोमियों 9:4 में उसने लिखा:

> वे इस्राएली हैं, और लेपालकपन का अधिकार और महिमा और वाचाएँ और व्यवस्था और उपासना और प्रतिज्ञाएँ उन्हीं की हैं। (रोमियों 9:4)

परमेश्वर वाचाओं के बाहर के अविश्वासियों से बढ़कर उन अविश्वासियों पर बड़ी दया दिखाता है जो उसके साथ वाचा में हैं।

पुराने नियम में, विश्वास न करने वाले यहूदियों को मिस्र से छुड़ाया गया। उन्होंने सीनै पर्वत पर परमेश्वर की अनुग्रहकारी व्यवस्था को प्राप्त किया। उन्होंने वायदे के देश पर विजय पाई। उन्होंने दाऊद और उसके पुत्रों के शासन से आशीष पाई। इसी प्रकार, नये नियम की कलीसिया में सच्चे विश्वासी अविश्वासियों के प्रति सेवकाई करते हैं; वे वचन के प्रचार को सुनते हैं; वे आत्मा के कार्य में सहभागी होते हैं। ऐसी बहुत सी रीतियों में, विशेष वाचा के समुदाय में अविश्वासियों को परमेश्वर की ओर से बड़ी दया दिखाई गई है।

दूसरा, वाचा में रहने से इन फायदों को पाने के साथ, राष्ट्रीय वाचाओं और नई वाचा के अविश्वासियों ने वफादारी की माँग को बढ़ा दिया है। इन्होंने दूसरे अविश्वासियों से अधिक परमेश्वर का

ज्ञान प्राप्त किया है जो इन वाचाओं से वंचित हैं। इसलिए उन से और अधिक आज्ञापालन और सेवा की माँग की जाती है। जैसा यीशु ने लूका 12:48 में बताया :

> "जिसे बहुत दिया गया है, उससे बहुत माँगा जाएगा।" (लूका 12:48)

जो परमेश्वर के वचन के सत्य को सुनते हैं, जो उसके मार्गों को जानते हैं, वे उसके प्रति वफादार रहने के लिए जिम्मेदार हैं।

तीसरा, राष्ट्रीय वाचाओं और परमेश्वर के साथ नई वाचा में अविश्वासी अपनी वफादारी और विश्वासघात के परिणामों को भी सहते हैं। एक तरफ, वे इस जीवन में उच्च स्तरीय आशीषों और शापों को, बहुत सी अलग-अलग प्रकार की अल्पकालिक आशीषों और शापों को अनुभव करते हैं। परन्तु दूसरी तरफ, मसीह के लौटने पर, परमेश्वर के साथ वाचा के अविश्वासियों की केवल एक अपेक्षा है: अनन्त शाप, अनन्त न्याय। उन्होंने मसीह में परमेश्वर के वायदों पर भरोसा नहीं रखा, इसलिए वे पाप में खोए रहते हैं और उनकी नियति अनन्त दण्ड है।

इब्रानियों के लेखक ने नई वाचा में अविश्वासियों के विरूद्ध आ रहे उच्च-स्तरीय न्याय की चेतावनी दी। इब्रानियों 10:28 और 29 में उसने लिखा :

> जब मूसा की व्यवस्था का न माननेवाला... बिना दया के मार डाला जाता है, तो सोच लो कि वह कितने और भी भारी दण्ड के योग्य ठहरेगा, जिसने परमेश्वर के पुत्र को पाँवों से रौंदा और वाचा के लहू को, जिसके द्वारा वह पवित्र ठहराया गया था, अपवित्र जाना है, और अनुग्रह के आत्मा का अपमान किया? (इब्रानियों 10:28-29)

यहाँ ध्यान दें कि ये लोग "वाचा के लहू के द्वारा" "पवित्र" ठहराए गए हैं। इसका यह मतलब नहीं है कि उन्होंने उद्धार पा लिया, बल्कि केवल यह कि वे परमेश्वर के लिए अलग किए गए थे, वे उसके साथ वाचा में थे। और जब ये लोग परमेश्वर के विरूद्ध विद्रोह करते हैं, जैसा कि वे सदैव करते हैं, केवल एक ही अपेक्षा है, परमेश्वर का अनन्त न्याय, न्याय जिसे उसने अपने शत्रुओं के लिए रखा है। और यह न्याय अत्यधिक कठोर होगा क्योंकि उन्हें दिखाई गई दया इतनी बड़ी थी।

अत:, हम देखते हैं कि राष्ट्रीय वाचाओं और नई वाचा में अविश्वासियों के लिए, दिव्य उदारता, मानवीय वफादारी और परिणामों के व्यवहार ऊँचे हो जाते हैं। परन्तु अन्तिम विश्लेषण में, यदि वे मन न फिराएँ और विश्वास न करें तो ये अविश्वासी परमेश्वर के अनन्त न्याय का सामना करेंगे।

शामिल विश्वासी

पुराने नियम को पढ़ते समय और उसे आज लागू करते समय मानव जाति की तीसर विचारणीय श्रेणी वे सच्चे विश्वासी हैं जो वाचा में हैं। ये अद्भुत रूप से परमेश्वर के विशेष लोग हैं जिनके लिए मसीह में अपरिवर्तनीय अनन्त जीवन रखा गया है। सच्चे विश्वासियों को दिखाई गई दिव्य उदारता को मापा नहीं जा सकता है, जिसमें पापों की क्षमा, और परमेश्वर के साथ अनन्त संगति शामिल है। जैसा पौलुस ने रोमियों 8:1 और 2 में लिखा :

> अत: अब जो मसीह यीशु में हैं, उन पर दण्ड की आज्ञा नहीं। क्योंकि जीवन की आत्मा की व्यवस्था ने मसीह यीशु में मुझे पाप की और मृत्यु की व्यवस्था से स्वतंत्र कर दिया। (रोमियों 8:1-2)

साथ ही, जबकि हम परमेश्वर की व्यवस्था के दण्ड से मुक्त हैं, हमें इसलिए बुलाया गया है कि परमेश्वर ने मसीह में हमारे लिए जो कुछ किया है उसके प्रति कृतज्ञता के कारण हम आज्ञापालन में

वफादार रहें। इसी कारण रोमियों 8:7 में पौलुस विश्वासियों की अविश्वासियों से तुलना इन शब्दों में करता है:

> शरीर पर मन लगाना तो परमेश्वर से बैर रखना है, क्योंकि न तो परमेश्वर की व्यवस्था के अधीन है और न हो सकता है। (रोमियों 8:7)

इसके विपरीत, परमेश्वर से प्रेम करने वाला मन उसकी व्यवस्था को मानता है। अतः, रोमियों 8:12 और 13 में, पौलुस ने लिखा,

> इसलिए हे भाइयो, हमारी जिम्मेदारी है कि हम देह की क्रियाओं को मारें। (रोमियों 8:12-13)

अन्य शब्दों में, विश्वासियों की जिम्मेदारी है कि वे अविश्वासियों से अलग जीवन बिताएँ, यानि, उनकी जिम्मेदारी है कि वे परमेश्वर की व्यवस्था के अधीन रहें, उद्धार को अर्जित करने के लिए नहीं, बल्कि परमेश्वर का सम्मान करने के लिए।

पुराने नियम के इस्राएलियों के समान, मसीहियों को अपने विश्वास को परखने और साबित करने के लिए पवित्र वचन के नियमों और कानूनों का पालन करना चाहिए। पुराने नियम में सच्चे विश्वासियों को अपने विश्वास की परख के रूप में मूसा की व्यवस्था का पालन करने के लिए बुलाया गया था। जैसा मूसा ने व्यवस्थाविवरण 8:2 में लोगों से कहा:

> स्मरण रख कि तेरा परमेश्वर यहोवा उन चालीस वर्षों में तुझे सारे जंगल के मार्ग में से इसलिए ले आया है, कि वह तुझे नम्र बनाए, और तेरी परीक्षा करके यह जान ले कि तेरे मन में क्या क्या है, और कि तू उसकी आज्ञाओं का पालन करेगा या नहीं। (व्यवस्थाविवरण 8:2)

नये नियम में मसीहियों को इसी प्रकार की परख के लिए बुलाया गया है। जैसा पौलुस ने 2 कुरिन्थियों 13:5 में कुरिन्थियों को बताया:

> अपने आप को परखो कि विश्वास में हो कि नहीं। अपने आप को जाँचो। क्या तुम अपने विषय में यह नहीं जानते कि यीशु मसीह तुम में है? नहीं तो तुम जाँच में निकम्मे निकले हो। (2 कुरिन्थियों 13:5)

मसीह परमेश्वर का सिद्ध आज्ञाकारी पुत्र था और उसकी धार्मिकता हमें दी गई है ताकि हमारा अनन्त उद्धार सुरक्षित रहे। परन्तु हमारे दैनिक जीवन में, हमें उस उद्धार को साबित करना है जो परमेश्वर ने हमें दिया है। जैसा पौलुस ने फिलिप्पियों को 2:12 में उत्साहित किया:

> डरते और काँपते हुए अपने उद्धार का कार्य पूरा करते जाओ। (फिलिप्पियों 2:12)

तीसरा, पुराने नियम और नये नियम में सच्चे विश्वासी अपनी वफादारी और विश्वासघात के परिणामों को सहते हैं। एक तरफ, सच्चे विश्वासी परमेश्वर से अल्पकालिक आशीषों और शापों को पाते हैं। न्यूनतम रूप में, हमें परमेश्वर के आत्मा की आशीषें दी जाती हैं, और इससे आगे, परमेश्वर अपने लोगों को अक्सर शारीरिक आशीषें भी देता है। परन्तु इसका विपरीत भी सत्य है। इब्रानियों के लेखक ने समझाया कि परमेश्वर ताड़ना के द्वारा अपनी सच्ची सन्तानों को प्रशिक्षित करता है। इब्रानियों 12:6 में उसने लिखा:

> क्योंकि प्रभु जिससे प्रेम करता है उसकी ताड़ना भी करता है, और जिसे पुत्र बना लेता है उसको कोड़े भी लगाता है। (इब्रानियों 12:6)

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट thirdmill.org पर जाएँ।

यहाँ इस जीवन में इन मिश्रित अनुभवों के बावजूद, अन्त में वाचा में अविश्वासियों और वाचा में सच्चे विश्वासियों के बीच बड़ा अन्तर होगा। परन्तु विश्वास करने वालों के लिए एक अन्तिम परिणाम होगा। जब मसीह महिमा में लौटेगा तो सच्चे विश्वासी केवल परमेश्वर की अनन्त आशीषों को अनुभव करेंगे। जैसा हम प्रकाशितवाक्य 21:7 में पढ़ते हैं:

> जो जय पाए वही इन वस्तुओं का वारिस होगा, और मैं उसका परमेश्वर होऊँगा और वह मेरा पुत्र होगा। (प्रकाशितवाक्य 21:7)

इस श्रृंखला में पुराने नियम के निरन्तर अध्ययन में, यह आवश्यक है कि हम सदैव मानव जाति की इन तीन श्रेणियों को याद रखें और यह कि ये वाचा के व्यवहार कैसे उन पर लागू होते हैं। जब हम राष्ट्रीय वाचाओं और नई वाचा के बाहर के अविश्वासियों के बीच के अन्तरों को याद रखते हैं, इन वाचाओं के अन्दर अविश्वासियों और इन वाचाओं के अन्दर सच्चे विश्वासियों के बीच अन्तरों को, तब हम यह समझने में सक्षम होंगे कि पुराने नियम का उन प्राचीन इस्राएलियों के लिए क्या अर्थ था जिन्होंने इसे पहले पढ़ा था और हम बेहतर रीति से यह देख पायेंगे कि यह आज हम पर कैसे लागू होता है।

पुराने नियम में प्रत्येक पद्यांश ने इसके मौलिक पाठकों को परमेश्वर की वाचाओं के संबंध में अपनी स्थिति पर विचार करने की चेतावनी दी और उन्हें उत्साहित किया और हमें भी आज ऐसा ही करना चाहिए। हर बिन्दू पर, पुराने नियम ने इस्राएल की वाचाओं से बाहर के अविश्वासियों को बुलाया कि वे परमेश्वर के अधीन रहें और उसकी वाचाओं में प्रवेश करें या उसके अनन्त दण्ड को सहें। पुराना नियम आज भी नई वाचा से बाहर के लोगों को यही करने के लिए कहता है। पुराने नियम ने पहले इस्राएल की राष्ट्रीय वाचाओं के अविश्वासियों को बुलाया और अब नई वाचा के अविश्वासियों को बुलाता है कि वे मसीह में परमेश्वर के वायदों पर विश्वास करें या परमेश्वर के साथ वाचा के संबंध का उल्लंघन करने के कारण कठोर अनन्त न्याय का सामना करें। और पुराने नियम ने कभी पुराने नियम के इस्राएल के सच्चे विश्वासियों को बुलाया और अब नई वाचा के सच्चे विश्वासियों को बुलाता है कि वे परमेश्वर द्वारा दिखाई गई करूणा को स्मरण रखें, परमेश्वर के सम्मुख विश्वासयोग्यता के साथ जीने के द्वारा अपने विश्वास को प्रकट करें, और निरन्तर उस नये आकाश और नई पृथ्वी में अनन्त जीवन की आशा रखें जिन्हें परमेश्वर अपने राज्य की पूर्णता में लेकर आएगा।

जब हम याद करते हैं कि वाचा के व्यवहार आज जीवित हर प्रकार के व्यक्ति पर कैसे लागू होते हैं, तो हम देख सकते हैं कि हमें पुराने नियम को अपने जीवन और अपने आस-पास के दूसरे लोगों के जीवन में कैसे लागू करना चाहिए। जब आज हम पुराने नियम को पढ़ते हैं, तो हमें पूछना है कि प्रत्येक पद्यांश कैसे वाचा के बाहर के अविश्वासियों को नई वाचा में प्रवेश करने के लिए बुलाता है, और हमें पूछना है कि प्रत्येक पद्यांश कैसे नई वाचा में अविश्वासियों को आगे बढ़कर मसीह पर विश्वास करने के लिए बुलाता है, और हमें पूछना है कैसे प्रत्येक पद्यांश नई वाचा में सच्चे विश्वासियों को सदा विश्वास में बढ़ने और मसीह में नई वाचा के प्रति कृतज्ञतापूर्वक विश्वासयोग्य बने रहने के लिए बुलाता है।

उपसंहार

इस अध्याय में हमने दिव्य वाचाओं की बाइबल की शिक्षा का परिचय दिया। हमने देखा कि परमेश्वर वाचा के प्रबन्धों के द्वारा अपने राज्य का संचालन करता है। हमने देखा कैसे पुराने नियम में प्रत्येक वाचा ने अपने इतिहास के विभिन्न चरणों में राज्य की माँग के अनुसार विशिष्ट बातों पर बल दिया।

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट thirdmill.org पर जाएँ।

हमने परमेश्वर के साथ वाचा के संबंध के मूलभूत व्यवहारों का अनुसंधान किया, और हमने देखा के ये व्यवहार किस प्रकार अतीत और वर्तमान में जीवित विभिन्न प्रकार के लोगों पर लागू होते हैं।

पुराने नियम के इस सर्वेक्षण में आगे बढ़ते समय, हम बार-बार दिव्य वाचाओं के विषय पर लौटेंगे। वाचाओं ने पुराने नियम में इस्राएल के लिए विश्वास के जीवन की संरचनाओं को बनाया, और वे आज भी विश्वास के जीवन की संरचनाओं को बनाती हैं।